



# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

एगो सयं  
पत्तणुठोड दुक्खं।।

प्राणी अकेला ही दुःख का  
अनुभव करता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 13 • 2 - 8 जनवरी 2023



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 31-12-2022 • पेज : 12 • ₹ 10



## दो दिवसीय जेटीएन प्रतिनिधि सम्मेलन का शुभारंभ आत्मयुद्ध कर मोहनीय कर्म को जीतने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

### संघीय समाचारों का सक्षम माध्यम है तेरापंथ टाइम्स

लहरिया (जोधपुर बाहर),  
२४ दिसंबर, २०२२

अध्यात्म के महासागर आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः लगभग ६ किलोमीटर का विहार कर लहरिया ग्राम के मेहता परिवार में पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आदमी शांति और सुखपूर्वक जीना चाहता है जिनके पास मन है, सुख से जीना चाहता है। कोई दुःख से जीना नहीं चाहता। सर्वदुःख मुक्ति हो जाए वह परम स्थान होता है।

सर्वदुःख मुक्ति जहाँ आठों ही कर्म न रहें, वह मोक्ष की स्थिति होती है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए कुछ संघर्ष-युद्ध करना पड़ सकता है। अहिंसा के जगत में युद्ध करने की बात अमान्य हो सकती है। पर शास्त्रकार तो महान व्यक्तित्व होते हैं, उन्होंने कहा युद्ध करो, अपनी आत्मा के साथ ही युद्ध करो, अपने आपसे लड़ो। अपने आप से लड़ने से परम सुख की प्राप्ति होती है, मिलने के बाद वापस जाता नहीं है।

आत्म-शुद्धि के लिए गुरु का संरक्षण भी प्राप्त हो सकता है? योग्य और अच्छे गुरु का मिलना विशेष बात होती है। गुरु अपने तरीके से शिष्यों का निर्माण करने का प्रयास कर सकते हैं। कभी गुरु अप्रसन्नता भी प्रकट कर लेते थे। उदाहरण देखना हो तो पूज्य भारीमाल जी स्वामी और मौजीराम जी स्वामी का उदाहरण सटीक बैठ सकता है। पूज्य कालूगणी और पृथ्वीराज जी स्वामी के उदाहरण हमारे संघीय उदाहरण हैं। इतिहास से जानकारी मिल सकती है। प्रसंगों को विस्तार से समझाया।

आचार्य भिक्षु को तो किसी आचार्य ने उत्तराधिकारी नहीं बनाया था। उनका तो प्रायः आचार्य काल ही रहा था, मुनि काल नहीं। आचार्य के पथदर्शन में शिष्य आत्मशुद्धि में आगे बढ़े। कड़ाई भी आत्मयुद्ध में अपेक्षित हो सकती है। उस कड़ाई का लक्ष्य शांति है। गुरु का साध्य यही रहता है कि शिष्य का विकास हो।

किस लक्ष्य से व्यक्ति क्या काम करता है, वह महत्त्वपूर्ण बात होती है। साध्य क्या है, यही बड़ी चीज होती है। शिष्य प्रमाद से मुक्त हो जाता है, तो गुरु द्वारा दी गई कड़ाईरूपी बात सफल हो जाती है। आत्मशुद्धि के लिए अप्रमाद का सहारा लेना होगा। हिंसा-हिंसा के परिणामों में अंतर हो सकता है। द्रव्य हिंसा से पाप कर्म लगे जरूरी नहीं।

आत्मयुद्ध में मोह कर्म को जीतने का प्रयास होना चाहिए। कषाय और अशुभ योग का आत्मा के साथ युद्ध हो तो आत्मा परम शांति को प्राप्त कर लेती है। आत्म युद्ध करना है, तो चोट मोहनीय कर्म पर करनी है। जहाँ उचित है, वहाँ चोट लगाएंगे तो हम आत्म विजय की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे।

आज मुनि विश्रुत जी के ननिहाल परिवार के परिसर में आए हैं। मेहता परिवार में खूब धर्म की भावना रहे। साध्वीवर्या तो आज आ नहीं सकी हैं।

(शेष पृष्ठ २ पर)

### सोशल मीडिया पर विश्वसनीय समाचारों का मान्यता प्राप्त उपक्रम है जेटीएन : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्यप्रवर की सन्निधि और अभातेयुप के तत्त्वावधान में दो दिवसीय जेटीएन प्रतिनिधि सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने मंचीय कार्यक्रम का आगाज करते हुए अपनी भावना अभिव्यक्त की। जेटीएन टीम ने गीत की प्रस्तुति दी। अभिषेक पोखरना ने पूरी जानकारी श्रीचरणों में अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर ने आशीर्वाचन फरमाया कि सूचना जगत ने विकास किया है। आज सूचना संवाद बहुत शीघ्रता से दूर तक फैल जाता है। अभातेयुप संवाद-सूचना प्रसारण का कार्य भी कर रही है। तेरापंथ टाइम्स भी काफी सक्षम और संघीय समाचारों का माध्यम है। धर्मसंघ और समाज से संबंधित समाचार-पत्र हाथ में लेते ही अनेक जानकारियाँ प्राप्त होती हैं।

सोशल मीडिया के रूप में जेटीएन है। पर मैं तो तेरापंथ टाइम्स ही देखा करता हूँ। जेटीएन से भी यत्किंचित जानकारी सामने आती है। इसका कार्य अधिकृत केंद्रीय संस्था के अंतर्गत होता है, इसलिए इसका भी महत्त्व है। कल्याण परिषद से मान्यता प्राप्त उपक्रम है। धर्मसंघ के लिए विश्वसनीय समाचार प्रदान करने वाला माध्यम यह प्रतीत हो रहा है। जेटीएन के सभी कार्यकर्ता अपना धार्मिक-आध्यात्मिक विकास भी करते रहें। जागरूकता भी रहें कि कहीं भूल न हो जाए। प्रामाणिकता के प्रति जागरूक रहते हुए सेवा करते रहें। जहाँ तक हो सके और परिष्कार-विकास करते रहें। मंगलकामना।



## धर्म के मार्ग पर चलकर बनाएँ अपनी आत्मा को सदात्मा : आचार्यश्री महाश्रमण

फिच, २६ दिसंबर, २०२२

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः लगभग १२ किलोमीटर का विहार कर जोधपुर जिले के फिच ग्राम में पधारे। ज्ञान प्रदाता आचार्यश्री ने फरमाया कि आत्मा के चार प्रकार बताए जा रहे हैं—परमात्मा, महात्मा, सदात्मा और दुरात्मा। जो आत्मा परम अवस्था को प्राप्त हो गई, मुक्त हो गई, सिद्ध गति में जो आत्माएँ हैं, वो परमात्माएँ हैं। वे न जन्म-मरण और न शरीरधारण करते न उनके कोई कर्म लगे हुए होते हैं। परम ज्ञान-दर्शन, आनंदमय और अनंत शक्ति संपन्न होते हैं। वे संसार से उपरत हैं।

(शेष पृष्ठ २ पर)



## विचार को व्यवहार में लाने में पुल का काम करते हैं संस्कार : आचार्यश्री महाश्रमण

सरदारपुरा, जोधपुर,  
२३ दिसंबर, २०२२

पूज्यप्रवर का जोधपुर प्रवास का तीसरा दिन। आज प्रातः लगभग ३ किलोमीटर का विहार कर परम पावन जोधपुर की अंतर्यात्रा करते हुए अमरानगर पधारे। तेरापंथ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। शुद्ध आचार का भी महत्त्व है। ज्ञान और आचार दो तट हैं, कोरा ज्ञान है, आचरण में वह नहीं आता है, तो ज्ञान अधूरा है।

कुछ लोग तत्त्व को जान तो लेते हैं, पर आचरण की क्षमता नहीं है। कईयों में आचरण की क्षमता है, पर उनको ज्ञान नहीं है तो दोनों में अधूरापन है। कुछ लोग होते हैं जो तत्त्व को जान भी लेते हैं और आचरण में समर्थ होते हैं, करते हैं। ज्ञान आचरण में कैसे आए। ज्ञान और आचरण दोनों तट हैं, इसके लिए पुल चाहिए वो पुल है—दर्शन, भक्ति, आकर्षण।

दूसरे शब्दों में कहूँ तो एक विचार तट है, एक व्यवहार तट है, विचार को आचार-व्यवहार में लाने के लिए पुल



है—संस्कार। इससे विचार-व्यवहार में परिमित हो सकता है।

भक्ति में अहंकार न हो। अपने आराध्य, सिद्धांत के प्रति भक्ति हो। भक्ति और समर्पण निःशर्त होती है। वह समर्पण विशुद्ध-उच्च कोटि का हो सकता है। मैं और तुम अलग-अलग न हों। जैन

शासन में नवकार मंत्र हर संप्रदाय में प्रतिष्ठित है। नवकार मंत्र में जैन एकता है। भक्तामर और तत्त्वार्थ सूत्र में लगभग जैन एकता है। नवकार मंत्र भक्ति का पाठ है। किसी के सामने हमारा उत्तमांग-मस्तक झुकता है, तो उसके प्रति हमारी भक्ति है।

त्यागी साधु के चरणों में व्यक्ति अपना मस्तक लगाता है। यह भी उनके प्रति भक्ति है। हमारे आराध्य भगवान महावीर हैं, उनके प्रति हमारी भक्ति है। भक्ति से शक्ति प्राप्त होती है। वीतराग सिद्ध भगवान, आचार्य-गुरु के प्रति भी हमारी भक्ति हो। आचार्य तो साक्षात् होते हैं। उपाध्याय व साधु-साध्वी के त्याग-संयम को नमन नमस्कार महामंत्र में किया गया है। इससे बड़ा कोई मंत्र जैन धर्म में प्रतिष्ठित नहीं है। नवकार मंत्र का जप करने वाला जैन है।

भक्ति भी अंतर्मन में होती है, तो ज्यादा बलवान होती है, यह एक प्रसंग से समझाया कि गुरु के सामने बुरा काम न करें। गुरु तो हमारे अंतर्मन में विराजते हैं। गुरु भक्ति वाला पाप का काम नहीं कर सकता। हम निर्वद-शुद्ध भक्ति का प्रयोग नवकार मंत्र पाठ से भी कर सकते हैं। आज अमरनगर आए हैं। यहाँ पिछला

चातुर्मास साध्वी सत्यवती जी का हुआ था, यहाँ के लोगों में धर्म की भावना रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि रात्रि में सघन अंधकार हो, उस समय दीपक का मिलना दुर्लभ है, समुद्र में यात्रा करते समय द्वीप मिले, मरुस्थल की यात्रा में वृक्ष मिले, सर्दी के समय अग्नि मिले ये दुर्लभ तो है पर असंभव नहीं। हमारे जीवन की प्रलंब यात्रा में गुरु की सन्निधि दुर्लभ हो सकती है, पर असंभव नहीं है। वे लोग धन्य होते हैं, जिन्हें गुरु का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में महिला मंडल अध्यक्ष सरला कांकरिया, तेषुप से महावीर चौधरी, तेरापंथ समाज गीत, सभा से महावीर चौपड़ा, टीपीएफ गीत, कन्या मंडल प्रस्तुति, सुरेश जीरावला, शहर की विधायिका सूर्यकांता, तेरापंथ महिला मंडल व जीरावला परिवार संयुक्त गीत, किशोर मंडल से विकास, कवीश जैन, ऋषभ सामसुखा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कन्या मंडल ने पूज्यप्रवर से नशामुक्ति के संकल्प स्वीकार किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।



### आत्मयुद्ध कर मोहनीय कर्म को जीतने का....

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि तीन दिन के जोधपुर प्रवास में अनेक लोग पूज्यप्रवर के उपपात में दर्शनार्थ आए हैं। गुरु चरणों का स्पर्श करने के लिए हर व्यक्ति आतुर रहता है। हमारे अनेक प्राचीन स्तोत्रों में भगवान के चरणों में प्रणाम किया गया है। चरणों को विशेष महत्त्व दिया गया है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में विजय मेहता, मेहता परिवार की बहनों ने गीत, राजू मेहता, हणुमंतराज मेहता ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

बाबूलाल जैन बालोतरा वालों ने २१ की तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

### धर्म के मार्ग पर चलकर बनाएँ अपनी आत्मा को ....

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

संसार जीवों में जो मनुष्य है, उनमें कोई महात्मा, कोई सदात्मा या कोई दुरात्मा हो सकते हैं? जो साधु लोग हैं, गृहस्थ छोड़, कंचनकामिनी के त्यागी हैं, वे महात्मा हैं। संसार काँटा और कंचनकामिनी एक चक्र है। इनमें तीन लोग भ्रमित हो जाते हैं। महात्मा त्यागी और सरल हो।

जिसके मन, वचन और काय में एकता है, वो तो महात्मा है। जिनके मन में कुछ, वाणी में कुछ और शरीर में कुछ है, वो दुरात्मा है। जो गृहस्थ लोग हैं, उनमें सदात्मा और दुरात्मा होते हैं। सदात्मा सज्जन आदमी, दुरात्मा दुर्जन आदमी। सदात्मा गृहस्थ जीवन में भी संत जैसा जीवन जीते हैं। जो हिंसा, छल-कपट में लगे हैं, वे दुरात्मा हैं। सज्जन-दुर्जन के आचार-विचार में फर्क हो सकता है।

दुर्जन विद्या का उपयोग विवाद में करेगा, सज्जन आदमी संवाद करेगा। विकास करेगा। दुर्जन धन का घमंड करेगा और सज्जन धन का दान करता है। दुर्जन के पास शक्ति है, तो दूसरों को दुःख देगा और सज्जन शक्ति का उपयोग सेवा में करेगा।

एक शत्रु अपने दुश्मन का गला भी काट दे वो उतना नुकसान नहीं करता जितना दुरात्मा कर सकती है। शत्रु तो एक जीवन को खत्म करेगा पर दुरात्मा तो पाप करेगा वो अनेक जन्म खराब कर सकती है। हम दुरात्मा न बनें। धर्म के नियम हम कितने पालते हैं। धर्म के नियमों को पालेंगे तो आत्मा का कल्याण हो सकेगा।

जीवन में अहिंसा-तप हो, झूठ से बचें। धर्म करेंगे तो धर्म हमारी रक्षा करेगा। धर्म जीवन में आए। यह अपेक्षा है। पूज्यप्रवर ने ग्रामवासियों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को समझाकर संकल्प स्वीकार करवाए।

पूज्यप्रवर के स्वागत में फिच गाँव में पंडित रामस्वरूप ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

♦ दूसरे कोई जाने या न जाने, तुम अपने आचार को निर्मल रखो, तुम्हारा कल्याण हो जाएगा।

— आचार्यश्री महाश्रमण

नव वर्ष पर विशेष

## समय का मूल्यांकन

□ मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' □

काल एक अखंड तत्त्व है जिसको मनुष्य ने अपनी बुद्धि कौशल के द्वारा ज्ञानवर्धन व कुशल प्रबंधन के लिए विभक्त कर दिया। सैकेंड, मिनट, घंटा, दिन, माह, वर्ष और युग आदि के रूप में विभिन्न प्रकार से विभक्त करके यह जानने का प्रयास करता है कि किस व्यक्ति की कितनी अवस्था हो चुकी है तथा कौन-सी वस्तु कितनी प्राचीन हो सकती है। नवीनता और प्राचीनता का संबंध काल के विभक्तिकरण के साथ जुड़ा है। यदि समय के विभाग न हों तो प्राचीनता की कोई अवधारणा नहीं रहेगी।

समय अपनी गति के साथ निरंतर प्रवाहमान है। उसे रोकना किसी के वश की बात नहीं, यद्यपि पानी के बहते हुए प्रवाह को रोकना अथवा मोड़ा जा सकता है। अल्प अथवा बहुतायत रूप में हवा के प्रवाह को भी रोकना अथवा मोड़ना संभव है किंतु समय का प्रवाह हर व्यक्ति, वस्तु को अपने साथ बहाकर ले जाता है। समय का सदुपयोग करने वाला उसको सार्थक सिद्ध कर लेता है अन्यथा यह व्यर्थ बीत जाता है। जो समय बीत जाता है, उस अतीत को व्यतीत होने के बाद लौटाना असंभव है और जो भविष्य हमारे सामने है उसके लिए स्वप्निल कल्पनाएँ व योजनाएँ बनाई जा सकती हैं किंतु उपयोग केवल वर्तमान का ही संभव है। आचार्य महाप्रज्ञ के शब्दों में कहूँ तो—वर्तमान का सदुपयोग करने वाला ही स्वर्णिम भविष्य का सही रूप में निर्माण कर सकता है। जैन वाङ्मय में भगवान महावीर की वाणी का अति सुंदर सूत्र प्राप्त होता है—“रवणं जाणाहि पंडिए” अर्थात् क्षण (समय) को पहचानने वाला ही विज्ञ

(पंडित) होता है। जिसने वर्तमान क्षण को नहीं पहचाना वह कभी जीवन को विकसित नहीं कर सकता। केवल अतीत की चिंता व भविष्य की कोरी कल्पनाओं में जो समय खो देता है वह वर्तमान समय को भी विनष्ट कर देता है। अतः व्यक्ति को वर्तमान को देखने व सदुपयोग करने में तत्पर रहना चाहिए।

किसी कवि ने कहा—

काल करे सो आज कर,  
आज करे सो अब।  
पल में प्रलय हो गई,  
तो फिर करोगे कब।।

किंतु आज के मनुष्य की बौद्धिक क्षमता व तार्किक मस्तिष्क ने इस पद को परिवर्तित कर दिया और बोल उठा—अरे भाई—

आज करे सो काल कर,  
काल करे सो परसों।  
इतनी जल्दी क्यों करे,  
जब जीना है तुझे बरसों।।

इससे लगता है कि या तो वह समय को पहचान चुका है। वह इस बात से अनभिज्ञ नहीं है कि मुझे कब तक जीना है या उसने मौत पर विजय प्राप्त कर ली अथवा वह मौत आने पर उससे भी तीव्र गति से पलायन करने में समर्थ है। ऐसा करने में सक्षम व्यक्ति ही इस प्रकार कह सकता है किंतु ये सब किसी के लिए संभव नहीं है। ऐसी स्थिति में वर्तमान का सदुपयोग करना ही बुद्धिमत्ता का लक्षण है। मनुष्य जीवन का पहला लक्ष्य है—वर्तमान का सदुपयोग। व्यक्ति अपने जीवन का अधिकांश समय प्रमाद में बर्बाद करता है। वह सत्ता व संपदा को हासिल करने में

जितना समय लगाता है उसका शतांश भाग भी जीवन को उन्नत बनाने अथवा आत्म-शोधन में नहीं लगाता। जब उसे धर्म या अध्यात्म मार्ग में बढ़ने, सत्संग, भजन या उपासना के लिए कहा जाता है तो एक मीठा-सा जवाब देता है कि भाई—क्या करें? समय नहीं है और मौज, शौक व बेकार की बातों में उसे समय गँवाने में कोई चिंतन या चिंता नहीं होती। जब नया वर्ष प्रारंभ होता है तो उसके स्वागत में विगत वर्ष को अलविदा अवश्य करता है। किंतु नए वर्ष के स्वागत में साथ उस समय का सदुपयोग नहीं होता है तो फिर—!

नए वर्ष के प्रारंभ में व्यक्ति अपने इष्ट-मित्रों को मंगलकामनाएँ भी प्रेषित करता है किंतु मंगलकामनाओं के साथ यदि आचरण मंगल नहीं होंगे तो कोरी मंगलकामनाओं से वर्ष अथवा जीवन मंगलमय कैसे बन पाएगा। अतः बौद्धिक अथवा विज्ञानों का दायित्व होता है कि जीवन को मंगल, उत्तम व श्रेष्ठता प्रदान करने के लिए समय को सार्थक बनाने में यत्न करें। मानव जीवन की दिशा व दशा में बदलाव में, समय की सार्थकता आवश्यक है और यही है जीवन की सफलता का मुख्य रहस्य। अतः नववर्ष के मंगल प्रारंभ के साथ मंगल संकल्प करें कि जीवन में धर्म और अध्यात्म के मूलभूत तत्त्वों को जीवन में अवतरित करने में समय का उपयोग करूँगा। संकल्प का चिंतन और क्रियान्विति की दिशा में बढ़ते चरण ही अभिष्ट मंजिल दे पाएगी। सार्थक समय ही सफल जीवन की अमिट कहानी है। तो आइए, हम सब समय का मूल्यांकन करें और बढ़ते रहें, हमारे कदम मंजिल की ओर—।

## मुनि शांति कुमार जी के प्रति काव्यात्मक उद्गार

### अहम्

● मुनि कमल कुमार ●

श्री तुलसी गुरुदेव से दीक्षाकर स्वीकार  
आत्म साधना में लगे मुनिवर शांति कुमार।।१।।

गुरु भ्राता के साथ में बिचरे लंबे काल  
नित प्रसन्न रहते सदा मुनिवर चंपालाल।।२।।

मुनि डूंगर चंपक हृदय बना लिया था स्थान  
सेवा की दिल खोलकर तन-मन से अग्लान।।३।।

मुनिवर श्री नगराज की सेवा ससम्मान  
स्मृति सभा में कर रहे मुनिवर के गुणगान।।४।।

महाश्रमण गुरुदेव की कृपा रही हर वक्त  
श्रेयांस विमल प्रबोध से संत मिले त्रयभक्त।।५।।

अंतिम पावस में मिले संत जितेंद्र कुमार  
जिनके वर सहयोग से हृदय हर्ष अनपार।।६।।

पौष कृष्ण पांचम निशा लिया है अंतिम श्वास  
शासन में दृढ़ मन रहे बना दिया इतिहास।।७।।

कमल अमन नमि हृदय के हैं ये उत्तम भाव  
भव सागर से शीघ्र ही तरे शांति कुमार नाव।।८।।

### अहं ऐं नमः

● मुनि श्रेयांस ●

सुजानगढ़ नाहटा परिवार में, जन्म लिया सुखकार।  
दीक्षा गुरु तुलसी कर से, जागृत हुए संस्कार।।

महाश्रमण की कृपा का, करते रहते उल्लेख।  
ऐसे अचानक चले गए, स्मृतियाँ रह गई शेष।।

शांत धीर गंभीर थे, मुनिवर शांति कुमार।  
असाध्य बीमारी सहन कर, किया सेवा पार।।

डूंगर, चंपक, तग की, की सेवा अग्लान।  
सेवा कर लिखा लिया, अपना ऊँचा नाम।।

गुरु कृपा का क्या कहें, रखा सदा सर हाथ।  
श्रेयांस, विमल, प्रबोध का, रहा अंत तक साथ।।

विशेष सेवा ली नहीं, कृतज्ञ भाव अनपार।  
श्रेयांस मंगलकामना, आत्मा हो भव पार।।

## धर्म का सर्वश्रेष्ठ फल है त्याग

छापली।

धर्म की आराधना से ही त्याग का विकास होता है। आध्यात्मिक शिक्षा से अपने जीवन का विकास होता है। अज्ञान के कारण व्यक्ति हिंसा करता है। शरीर के साथ अन्याय वही करता है जो असंयमी होता है। त्याग और संयम से जीवन में ऊर्जा का विकास होता है तथा धार्मिक जीवन बनता है। छापली गाँव के श्रावक शंकरलाल खमेसरा के घर पर व्यक्त करते हुए मुनि कोमल कुमार जी ने कहा कि संसार में चार प्रकार के मनुष्य होते हैं—भाग्यशाली, सौभाग्यशाली, महाभाग्यशाली और दुर्भाग्यशाली।

जिनके पास धन है वह भाग्यशाली। जिसके पास धन भी है और स्वास्थ्य भी है वह सौभाग्यशाली। जिसके पास धन भी है स्वास्थ्य भी है और धर्म भी है वह महाभाग्यशाली और जिसके पास न धर्म है, न स्वास्थ्य और न ही धर्म है वह दुर्भाग्यशाली। इतना तो विवेक होना ही चाहिए कि हम दुर्भाग्यशाली न बनें। मुनि धीरज कुमार जी एवं मोहनलाल डाकलिया ने भी अपनी भावना व्यक्त की।

इस अवसर पर शंकरलाल खमेसरा व सुधा बहन ने मुनिश्री का स्वागत किया और अपनी भावना प्रस्तुत की।

## ज्ञानशाला सार-संभाल

अमराईवाड़ी।

ज्ञानशाला गुजरात आंचलिक संयोजक प्रवीण मेड़तवाल एवं सह-संयोजक भावेश हिरण द्वारा ज्ञानशाला की सार-संभाल की गई। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। ज्ञानशाला संयोजक राजेंद्र बाफना ने स्वागत वक्तव्य दिया। मुख्य प्रशिक्षिका सेजल मांडोत ने ज्ञानशाला की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। क्षेत्रीय सह-संयोजिका आशा खाब्या ने अमराईवाड़ी ज्ञानशाला की सराहना करते हुए अपना वक्तव्य दिया।

सभा अध्यक्ष रमेश पगारिया ने अपनी भावना व्यक्त की। सभा मंत्री गणपत हिरण, तेयुप अध्यक्ष हेमंत पगारिया, कैलाश बाफना, दिनेश सिंधवी, मुकेश सिंधवी, सुनील चिप्पड़, कैलाश रांका, दिनेश टुकल्या एवं निर्मल ओस्तवाल की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन सहयोगी प्रशिक्षिका कोमल हिरण ने एवं आभार ज्ञापन शशि ओस्तवाल ने किया।

## प्रेक्षावाहिनी कार्यशाला का आयोजन

आमेट।

साध्वी विशदप्रभा जी के सान्निध्य में प्रेक्षावाहिनी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ प्रेक्षावाहिनी महिलाओं के सुमधुर प्रेक्षा गीत से शुभारंभ किया गया। साध्वीश्री ने कहा कि जो अपने मन को शांत व इंद्रियों पर विजय कर लेता है वही साधना का अधिकारी बनता है। साध्वी प्रशमयशा जी ने कहा कि ध्यान साधु का प्राण तत्त्व है। ध्यान से एकाग्र शक्ति बढ़ती है।

प्रेक्षावाहिनी संयोजिका रेणु छाजेड़ ने कहा कि ध्यान हमारी वृत्ति को परिमार्जित कर आत्मा का ऊर्जारोहण करता है। जैन दर्शन में ध्यान का बहुत बड़ा महत्त्व है। साधना में ध्यान की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। कार्यशाला में सभा मंत्री ज्ञानेश्वर मेहता, अरविंद भरसारिया, महेंद्र बोहरा, प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षक मिश्रीलाल चौधरी, देवेन्द्र बाफना सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन रेणु छाजेड़ ने किया।



## 'उम्मीद एक बेहतर कल की' कार्यशाला का आयोजन

रोहिणी, दिल्ली।

अभातेममं द्वारा निर्देशित निर्माण के अंतर्गत 'उम्मीद एक बेहतर कल की' पहली कार्यशाला का आयोजन रोहिणी सेक्टर-५-बी के निगम प्रतिभा विद्यालय के कक्षा पाँचवीं के कुल ३२ बच्चों के साथ किया गया। दिल्ली महिला मंडल की सहमंत्री इंदिरा सुराणा ने बच्चों को समझाया कि जीवन के लिए अति महत्वपूर्ण नैतिक बातों की पढ़ाई होगी। प्रचार-प्रसार मंत्री प्रवीणा सिंधी ने महाप्रयाण ध्वनि का ६ बार प्रयोग करवाया।

कार्यसमिति सदस्य व दिल्ली ज्ञानशाला परामर्शक सरिता चोपड़ा ने सत्संगति के बारे में कहानी के माध्यम से अच्छी और बुरी संगत के बारे में बताया।

पर्यावरण व वातावरण की स्वच्छता पर रोहिणी की संयोजिका कुसुम खटेड़ ने पर्यावरण का अर्थ समझाते हुए तीन-पी का ध्यान रखें। पेड़ लगाएँ, पॉलिथीन यूज ना करें तथा पानी बचाएँ, अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखने के बारे में बताया।

सुशीला पुगलिया ने ध्यान के सूक्ष्म प्रयोग करवाते हुए महाप्रयाण मुद्रा, ज्ञान मुद्रा व श्वास प्रेक्षा के प्रयोग करवाए। सभी बच्चों से बीच-बीच में प्रश्न-उत्तर और तालमेल रखा गया। सभी बच्चों ने पूरे समय ध्यान से सभी को सुना एवं सभी प्रयोग किए।

## शिल्पशाला का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं द्वारा साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में शिल्पशाला का आयोजन किया गया। साध्वीश्री द्वारा नवकार मंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष लता बाफना ने सभी का स्वागत करते हुए साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। साध्वी दक्षप्रभा जी एवं साध्वी मेरुप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि हमारे भीतर ज्ञान, दर्शन, शक्ति का अनंत खजाना है।

पॉजिटिव गुणों को अपनाकर हम अपने जीवन को सुखमय बना सकते हैं। साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि सारगर्भित छोटे-छोटे उदाहरणों के द्वारा बहनों को समझाया है कि व्यक्ति को सोचने का तरीका बदलना चाहिए और हमारे भीतर

## श्री महिला मंडल के विविध आयोजन

जो एनर्जी है इसका उपयोग पॉजिटिव सोच में करें। अच्छे विचारों को अपने पास रखें एवं बुरे विचारों का पोस्टमार्टम कर देना चाहिए। सुविचारों का बार-बार चिंतन कर स्वयं के साथ आत्मसात करना चाहिए।

कार्यशाला में अभातेममं कार्यकारिणी सदस्य मधु कटारिया, सभा के मंत्री हेमराज सेठिया ने अपने विचार रखे। उपाध्यक्ष सुमन पटावरी, शोभा बोथरा, संरक्षिका कंचन देवी बाफना, गुलाब देवी छाजेड़, सुशीला देवी छाजेड़ एवं कार्यसमिति सदस्य बहनें उपस्थित थीं।

शिल्पशाला का संचालन पूनम दक ने किया। आशा लोढ़ा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

## 'द पॉवर ऑफ एफर्मेशन' कार्यशाला का आयोजन

गोरेगाँव मुंबई।

तेममं, गोरेगाँव शाखा द्वारा साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में 'द पॉवर ऑफ एफर्मेशन' की एक विशेष कार्यशाला का आयोजन हुआ। साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि एफर्मेशन की शक्ति को पहचानें। हमारे संकल्पों में बहुत बल होता है, पर जरूरत है सबसे पहले अपनी दुर्बलताओं को पहचानें, सबसे पहले व्यक्ति अपनी कमियों, दुर्बलताओं पर दृष्टिपात करे और एक ऐसी विधि तैयार करे, जिसके माध्यम से वह अपनी दुर्बलताओं पर काबू पा सके।

संकल्प की शक्ति महान होती है। जब यह स्वीकृति सूचक वाक्यों का प्रयोग अपने जीवन में अपनाता है तो उसके जीवन में एक सुखद परिणाम परिवर्तन के रूप में आता है। साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने अपने मुख्य वक्तव्य में कहा कि सबसे पहले पॉवर ऑफ पोजिटिविटी से आपको अपने अंदर सकारात्मक ऊर्जा भरनी है।

व्यक्ति का संकल्प मजबूत होता है तो उसकी दिशा सही होती है। जब वह एक सकारात्मक दृष्टि से संकल्पों को दोहराता है तब ऐसा सुखद परिणाम उसको देखने को मिलता है जो उसके लिए बहुत ही सुखदायी होता है।

तेममं, गोरेगाँव में इस अवसर पर पहचान हमारे आते ही अपनी इस एफर्मेशन को इस रूप में पुष्ट किया कि आज महिलाओं की एक विशाल उपस्थिति हमें यहाँ देखने को मिल रही है। इस अवसर पर मंगलाचरण महिला मंडल द्वारा एवं स्वागत और आभार ज्ञापन महिला मंडल संयोजिका कांता सिसोदिया द्वारा किया गया।

संयोजिका ने साध्वीवृंद के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की।

मदुरे।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा द पॉवर ऑफ एफर्मेशन सकारात्मक सोच का विकास कैसे हो कि कार्यशाला का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया।

कार्यशाला का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ किया गया। मंगलाचरण महिला मंडल द्वारा प्रेरणा गीत के साथ किया। संरक्षिका चंद्रकांता कोठारी ने सभी बहनों का स्वागत करते हुए एफर्मेशन क्या है कैसे करें, कब करें के बारे में बताया। दस एफर्मेटिव वाक्य बताए, जिन्हें रोज सुबह दोहराने से जीवन में सकारात्मक परिणाम लाए जा सकते हैं। बहनों ने अपनी जिज्ञासाएँ रखी जिनका समाधान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन कन्या मंडल प्रभारी मधु जीरावला ने किया।

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्वावधान में शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी, साध्वी रतिप्रभा जी एवं संचित प्रज्ञा जी आदि दो समणी जी के सान्निध्य में 'द पॉवर ऑफ एफर्मेशन' कार्यशाला आयोजित की गई। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र का संगान किया गया। कार्यशाला की शुरुआत महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत द्वारा की।

तेममं अध्यक्ष निर्मला देवी संकलेचा के निर्देशन में यह कार्यशाला आयोजित की गई। शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि मनन करने की शक्ति सिर्फ मनुष्य में ही होती है, मनुष्य की जैसी सोच होती है, जैसे विचार होते हैं वैसे ही उसका व्यवहार होता है। नारी में क्षमता, ममता, समता यह तीनों चीजें होने बहुत जरूरी हैं तभी नारी का विकास हो सकता है। सकारात्मक सोच से व्यक्ति नहीं करने वाला कार्य भी बहुत आसानी से कर सकता है।

अतः हमारी सोच हमेशा सकारात्मक होनी चाहिए। साध्वी गौरवयशा जी ने कहा कि सकारात्मक सोच से व्यक्ति कहाँ से कहाँ पहुँच सकता है और नारी तो तभी सशक्त बनेगी जब उसकी सोच सकारात्मक होगी, हर व्यक्ति में अनंत शक्ति होती है, अनंत क्षमता होती है, यह सोचना चाहिए कि हम हर एक कार्य कर सकते हैं, यह तभी होगा जब हमारी सोच सकारात्मक होगी।

कार्यशाला में परामर्शक पीपी देवी

ओस्तवाल, नारायणी देवी छाजेड़, उपाध्यक्ष चंद्रा बालड़, रानी बाफना, सहमंत्री इंदु भंसाली, रेखा बालड़, प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा, कन्या मंडल प्रभारी श्वेता सालेचा, निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल, पूर्व परामर्शक कमलादेवी ओस्तवाल सहित लगभग 900 बहनें उपस्थित थीं। कार्यशाला का संचालन व आभार ज्ञापन मंत्री संगीता बोथरा ने किया।

## पॉवर ऑफ पोजिटिविटी और ईमानदारी कार्यशाला

टी-दासरहल्ली।

अभातेममं के निर्देशानुसार निर्माण के अंतर्गत 'उम्मीद एक बेहतर कल की' कार्यशाला का तृतीय चरण तेममं द्वारा भवन में आयोजित किया गया। कार्यशाला का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र के द्वारा किया गया।

अध्यक्ष रेखा मेहर ने पधारे हुए सभी का स्वागत किया और जीवन में हिसाब में, व्यवहार में ईमानदारी रखकर कैसे पोजिटिविटी रखनी है, वास्तविकता बताई। बबिता गांधी ने एल्फाबेटिक माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए। उपाध्यक्ष नेहा चावत ने एक दोहे के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए।

कन्या मंडल प्रभारी सोनिया ने नंबर्स के उदाहरण देते हुए अपने विचार रखे। कोषाध्यक्ष नम्रता ने प्रेक्षाध्यान से सोच में कैसे पोजिटिविटी ला सकते हैं, बताया। मंत्री गीता बाबेल ने ईमानदार रहकर पोजिटिविटी का अर्थ समझाया।

मंडल की परामर्शक पुष्पा बोहरा ने कैसे घर में रिलेशन में पोजिटिविटी रखें, बताया। रुचिका गांधी ने कविता के माध्यम से अपने विचार रखे। सरोज मारु ने अपने विचार रखे। उपाध्यक्ष दीपिका गांधी ने आभार ज्ञापन किया।

## जैन तत्त्व ज्ञान परीक्षा का आयोजन

राउरकेला।

अभातेममं की योजना आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत पहला प्रश्न-पत्र केंद्रीय व्यवस्थापिका संपत भंसाली की उपस्थिति में महिला मंडल की अध्यक्ष सरोज गोलछा और सभा के अध्यक्ष छगन जैन के हाथों द्वारा खोला गया। उपाध्यक्ष सरिता कोचर और मंत्री बिनीता जैन भी उपस्थित थे।

केंद्रीय व्यवस्थापिका संपत भंसाली की उपस्थिति में तत्त्व ज्ञान की परीक्षा आयोजित

की गई। परीक्षा के समय में महिला मंडल की उपाध्यक्ष सरिता कोचर उपस्थित थी। एक भाई और एक बहन ने प्रथम वर्ष तथा २ बहनों की तृतीय वर्ष की परीक्षा में सहभागिता रही।

## द पॉवर ऑफ पोजिटिविटी कार्यशाला का आयोजन

भीलवाड़ा।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं, भीलवाड़ा द्वारा मुनि पारस कुमार जी के सान्निध्य में जयाचार्य भवन आर०सी० व्यास कॉलोनी, भीलवाड़ा में 'द पॉवर ऑफ पोजिटिविटी' शिल्पशाला समायोजित की गई।

मुनि पारस कुमार जी ने कार्यशाला में कहा कि व्यक्ति को साधना प्रदर्शन के लिए नहीं आत्मदर्शन के लिए करनी चाहिए। नकारात्मक भावों से दूर रहते हुए अपनी आत्मसाधना की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। नकारात्मक सोच अहंकार को बढ़ावा देती है, वहीं सकारात्मक सोच से आत्मविश्वास बढ़ता है। अपने भीतर छिपे ज्ञान के खजाने को अच्छी सोच से उजागर करते हुए शांत सुखमय जीवन जीया जा सकता है।

मुनि शांतिप्रिय जी ने कहा कि अगर व्यक्ति भगवान महावीर के मूल्यवान सिद्धांतों को आत्मसात करते हुए जीवन व्यवहार में लाए तो वह सदैव सकारात्मक सोच के साथ अपनी आत्म उन्नति करते हुए शांत सुंदर सुखमय जीवन यापन कर सकता है।

कार्यशाला के मुख्य वक्ता अनिल चौधरी ने कहा कि सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति जगाते हुए अच्छा लगता है, ताकि वह स्वयं और समाज विकास में उपयोगी बने। कभी भी जीवन में बुरी परिस्थिति आए तो धबराना नहीं चाहिए, अपितु ये सोचे कि जब अच्छा वक्त गुजर गया तो बुरा वक्त भी गुजर जाएगा। महिला मंडल अध्यक्षा मीना बाबेल ने स्वागत वक्तव्य देते हुए कहा कि पॉजिटिव सोच से हम अपने जीवन में बदलाव लाते हैं और तनाव भय आदि से मुक्त होकर अपने लक्ष्य के प्रति सजग बनते हैं।

कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार महामंत्र उच्चारण एवं महिला मंडल की बहनों के प्रेरणा गीत से हुआ। मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि कार्यक्रम का संचालन कोषाध्यक्ष सुमन दुगड़ ने किया। आभार मंत्री रेणु चोरड़िया ने किया। कार्यक्रम में बहनों की अच्छी उपस्थिति रही।

♦ अज्ञान ऐसा अभिशाप है जो क्रोध, लोभ आदि से भी ज्यादा खतरनाक है।

— आचार्यश्री महाश्रमण

## कारागृह को सुधार गृह मानो

**बालेश्वर, उड़ीसा।**

मुनि जिनेश कुमार जी का विशेष प्रवचन कारागृह में कैदियों के मध्य हुआ। जिसमें सैकड़ों कैदियों को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि व्यक्ति जैसा कर्म करता है, वैसा फल मिलता है। समता व पश्चात्ताप के साथ कर्म भोगने वाला व्यक्ति सुखी रहता है, व्यक्ति को आत्म-निरीक्षण करना चाहिए। क्रोध, असत्य, नशा, मोह, गरीबी, अमीरी, प्रतिशोध, वैर, तनाव, अशिक्षा, अपराध के कारण हैं।

मुनिश्री ने आगे कहा कि जिस प्रकार बारूद से नगर नष्ट हो जाता है उसी प्रकार क्रोध से जीवन बर्बाद हो जाता है। व्यक्ति गलती का पुतला है। गलती होना स्वाभाविक

है। जो गलती पर गलती करता है वह शैतान होता है, गलती करके पुनः गलती नहीं करता वह इंसान होता है। कभी गलती नहीं करता वह भगवान होता है। कारागृह को सुधार गृह मानो। अपने आपको बदलने के लिए सत्संगत, जप, तप, ध्यान, योगासन करना चाहिए। नशामुक्त जीवन जीना चाहिए। कारागृह को मंदिर मानकर आत्मसाधना व स्वाध्याय करना चाहिए। स्वाध्याय से सकारात्मक चिंतन का विकास होता है।

मुनिश्री की प्रेरणा से करीबन २० व्यक्तियों ने नशामुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया। मुनि परमानंद जी ने कहा कि साधु अहिंसा आदि पाँच महाव्रतों की साधना करते हैं। सत् प्रवृत्ति से व्यक्ति

अच्छा इंसान बनता है। असत् प्रवृत्ति से बुरा इंसान होता है। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत प्रस्तुत किया।

जेलर अविनाश बोहरा ने स्वागत भाषण करते हुए विचार रखे। इस अवसर पर कनकमल धाड़ेवा, सुरेश सिंधी ने विचार रखे व तेरापंथ सभा के अध्यक्ष धीरज धाड़ेवा ने आभार व्यक्त किया। निर्मल बैद, विकास मालू, योगेश सिंधी, पुलिस अधिकारी भूपेंद्र आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

मुनि जिनेश कुमार जी ने अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, अहिंसा यात्रा के बारे में भी बताया। मुनिश्री ने कैदियों से वार्तालाप की तथा उन्हें अच्छा जीवन जीने की प्रेरणा दी।

## सभी आध्यात्मिक धन संपन्न बनें

**चेन्नई।**

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी तीर्थस्थली बहत्तर जिनालय के विशाल प्रांगण पहुँची। चेन्नई तेरापंथी सभा द्वारा चेन्नई स्तरीय मंगलभावना समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि हमें जीवन की यात्रा को जागरूकता से पूरा करना है। जीवन को आध्यात्मिक संपन्न बनाना है। जीवन में सहिष्णुता का वैभव आवश्यक है। सहिष्णुता विकास-पथ के लिए महत्वपूर्ण सूत्र है। साध्वीश्री जी ने कहा कि हमारे जीवन की यात्रा बहुत छोटी है। सभी भगवान महावीर के आदर्श वाक्य को याद रखें। सहनशीलता और मधुरभाषिता के साथ आलस्य का त्याग आवश्यक है। धीरज आदि जीवन में न हो तो मनचाहा स्वप्न नहीं फलता।

साध्वीश्री जी ने कहा कि व्यक्ति एक सीमा के पश्चात अपनी जीवनशैली में

परिवर्तन लाए, यह अपेक्षित है। जीवन में आनंद का विस्मरण न करें। हमारी जीवन यात्रा कैसी है इसका अंतर्बोध करते रहें।

तेरापंथ का हर श्रावक-श्राविकाएँ दायित्वशील है। माता-पिता की प्राप्त उपमा को चरितार्थ कर रहे हैं। साधु-संतों के प्रवास का अधिकाधिक लाभ उठाते रहें। आप सभी की जीवन यात्रा मंगलमय हो। हमारी यात्रा मंगलमय हो। हम सभी संघ के संवर्धन में अपना योगदान देते रहें। गुरु निर्देश का अक्षरसः पालन करें।

साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी ने कहा कि आज चेन्नईवासी शुभकामना करने यहाँ आए हैं। हमारा चेन्नई प्रवास आनंदकारी रहा। उन्होंने चेन्नई शब्द को व्याख्यायित करते हुए कहा कि चेन्नई विकासकारी, सृजनकारी क्षेत्र है। साध्वीश्री जी का विजन मिशन फलदायी रहा। हम सभी साध्वियाँ

चेन्नईवासियों के आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना करते हैं। साध्वीवृंद ने गीत का समूह संगान किया।

तेरापंथ सभाध्यक्ष उगमराज सांड ने भावपूर्ण विचार व्यक्त करते हुए चातुर्मास को कार्यकारी बताया। साहूकारपेट ट्रस्ट बोर्ड अध्यक्ष विमल चिप्पड़ ने कहा कि साध्वीश्री जी का यह चातुर्मास यादगार और उपलब्धियों भरा रहा। महिला मंडल ने गीत का संगान किया। तेरापंथ ट्रस्ट बोर्ड के मंत्री राजेंद्र भंडारी ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में आगामी निरामय सुखद यात्रा की मंगलकामना की।

◆ दीर्घ जीवन पाने की कामना से पूर्व यह संकल्प करो कि मैं परोपकारयुक्त जीवन जीऊँगा।

— आचार्यश्री महाश्रमण



## संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

### एटीडीसी में नई मशीनों का उद्घाटन

**विजयनगर।**

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, मागड़ी रोड में अत्याधुनिक मशीनों का विस्तारीकरण करते हुए इलेक्ट्रोलाइट मशीन, कोगुलेशन मशीन का उद्घाटन जैन संस्कार विधि से विधि-विधान एवं मंत्रोच्चार द्वारा मुख्य संस्कारक डालिमचंद नौलखा, संस्कारक राकेश दुधोड़िया, राष्ट्रीय प्रभारी राकेश जैन, राष्ट्रीय सहप्रभारी संजय भंडारी तथा विजयनगर एवं संपूर्ण दक्षिण भारत से समागत संस्कारकों की टीम द्वारा किया गया।

इस अवसर पर अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता, महामंत्री पवन मांडोत, अभूतपूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया, प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरना, एटीडीसी संयोजक महावीर टेबा आदि अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

### नामकरण संस्कार

**सूरत।**

रावलिया कला निवासी, सूरत प्रवासी पूनमचंद बम्ब के सुपुत्र निखिल-प्रीति बम्ब के प्रांगण में कन्या धन का जन्म हुआ। जिसका नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू, बजरंग बैद ने संपूर्ण विधि-विधान से संपन्न करवाया।

पूनमचंद व शिशु के नानाजी शांतिलाल ने उपस्थित पारिवारिक जन व संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से नामकरण पत्रक व मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

### पाणिग्रहण संस्कार

**कोयंबटूर।**

लाडनू निवासी, कोयंबटूर प्रवासी संगीता निर्मल गुनेचा के सुपुत्र की शादी डेह निवासी, चेन्नई प्रवासी सुशील कोठारी की सुपुत्री निधि का पाणिग्रहण संस्कार जैन संस्कार विधि से दिल्ली से समागत उपासक एवं अभातेयुप संस्कारक विमल गुनेचा एवं कोयंबटूर के संस्कारक निर्मल बेगवानी के द्वारा पूर्ण मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया गया।

इस अवसर पर लगभग ५०० लोगों की उपस्थिति रही। आशीर्वाद मंत्रों के साथ कार्यक्रम को संपन्न किया गया।

**विजयनगर।**

जैतारण निवासी, बैंगलुरु प्रवासी रमेश कुमार के सुपुत्र विशाल छल्लापी एवं फरीदाबाद निवासी, बैंगलुरु प्रवासी प्रदीप जौहरी की सुपुत्री गरिमा जौहरी का विवाह संस्कार संस्कारक दिनेश मरोठी, धीरज भादानी एवं आशीष सिंधी ने जैन संस्कार विधि द्वारा विधि-विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार के द्वारा संपादित करवाया। आभार ज्ञापन जैन संस्कार विधि के प्रभारी धीरज भादानी ने किया।

**मंडिया।**

मंडिया निवासी विमल एवं सिंधु मेहता की सुपुत्री मुस्कान का शुभ विवाह मैसूर निवासी प्रकाशचंद एवं कांता नौलखा के सुपुत्र विशाल के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक डालिमचंद नौलखा, सह-संस्कारक राजेश आच्छा, लक्की श्रीश्रीमाल ने संपन्न करवाया।

तेयुप मंडिया की तरफ से नौलखा परिवार व मेहता परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया। तेयुप अध्यक्ष प्रवीण दक ने संस्कारकों व दोनों परिवारों और उपस्थित सभी महानुभावों का आभार ज्ञापित किया।

**पूर्वांचल-कोलकाता।**

नागौर निवासी, हावड़ा-कोलकाता प्रवासी अशोक चोरड़िया की सुपुत्री ऋषिका चोरड़िया का शुभ पाणिग्रहण संस्कार कोलकाता निवासी बप्पदित्य दत्ता के सुपुत्र विक्रमादित्य दत्ता के संग जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुरेंद्र सेठिया द्वारा संपन्न करवाया गया।

अशोक चोरड़िया ने परिषद व संस्कारकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। तेयुप पूर्वांचल के अध्यक्ष राजीव जैन और जैन संस्कार विधि के प्रभारी प्रभात चंडालिया ने मोमेंटो व जैन विवाह प्रमाण पत्र प्रदान कर नव निवाहित जोड़े को शुभकामनाएँ और बधाई प्रेषित की।



## अभातेयुप योगक्षेम योजना

* अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
* श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
* श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
* श्री राकेश कठोटिया, लाडनू-मुंबई	5,00,000
* श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
* श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
* श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
* श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
* श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
* श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
* श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
* श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छपर-सिलीगुड़ी	5,00,000
* श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
* श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
* श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000



## मनोनुशासनम्

□ आचार्य तुलसी □



### पहला प्रकरण

आत्मा एक द्रव्य है। प्रत्येक द्रव्य अनंत धर्मात्मक होता है। आत्मा के स्वरूप की व्याख्या उन धर्मों के आधार पर की जा सकती है जो धर्म परमाणु समुदाय से प्रभावित होते हैं। कुछ परमाणु आत्मा के ज्ञान, दर्शन को आवृत्त करते हैं। कुछ परमाणु आत्मा में विकार उत्पन्न करते हैं। कुछ परमाणु आत्मा के वीर्य का प्रतिघात या अवरोध करते हैं। कुछ परमाणु पारमाणविक संयोग या प्राप्ति के हेतु बनते हैं। इस प्रकार आवरण, विकार, प्रतिघात और प्राप्ति—इन चार रूपों में परमाणु आत्मा को प्रभावित करते हैं। यह प्रभावित अवस्था ही बंधन है। इस प्रभाव से छूटना ही मुक्ति है और वही आत्मा का स्वरूप है। निरावरण दशा आत्मा का स्वरूप है। इसका अर्थ है ज्ञान और दर्शन का पूर्णरूपेण प्रकट हो जाना। वीतरागता आत्मा का स्वरूप है। इसका अर्थ है विकार से पूर्णरूपेण मुक्त हो जाना। शक्ति आत्मा का स्वरूप है। परमाणुओं से असंबद्ध होना आत्मा का स्वरूप है। उस स्वरूप की उपलब्धि ही साधना का प्रयोजन है। बंधन-मुक्ति से बढ़कर साधना का और प्रयोजन हो ही क्या सकता है?

- (११) मनो-वाक्-काय-आनापान-इंद्रिय-आहाराणां निरोधो योगः॥  
 (१२) संवरो गुप्तिर्निरोधो निवृत्त इति पर्यायाः॥  
 (१३) शोधनं च॥  
 (१४) समितिः सत्यप्रवृत्तिर्विशुद्धि इति पर्यायाः॥  
 (१५) पूर्व शोधनं ततो निरोधः॥  
 (१६) हित-मित-सात्त्विकाहरणं आहारशुद्धिः॥  
 (१७) स्वविषयान् प्रति सम्यग्योग इन्द्रियशुद्धिः॥  
 (१८) प्रतिसंलीनता च॥  
 (१९) प्राणायाम-समदीर्घश्वास-कायोत्सर्ग आनापनशुद्धिः॥  
 (२०) कायोत्सर्गाद्यासन-बंध-व्यायाम-प्राणायामैः कायशुद्धिः॥  
 (२१) निस्संगत्वेन च॥  
 (२२) प्रलम्बनादीयासेन वाक्शुद्धिः॥  
 (२३) सत्यपरत्वेन च॥  
 (२४) दृढसंकल्पैकाग्रसन्निवेशनाभ्यां मनःशुद्धिः॥

- (११) बंधन-मुक्ति के लिए मन, वाणी, काय, आनापान, इंद्रिय और आहार के निरोध को योग कहा जाता है।  
 (१२) संवर, गुप्ति, निरोध और निवृत्ति—ये उनके पर्यायवाची नाम हैं।  
 (१३) मन, वाणी, काय, आनापान, इंद्रिय और आहार की शुद्धि को भी योग कहा जाता है।  
 (१४) समिति, सत्यप्रवृत्ति और विशुद्धि—ये उनके पर्यायवाची नाम हैं।  
 (१५) पहले मन आदि का शोधन होता है, फिर निरोध।  
 (१६) हितकर भोजन करना, मितभोजन करना—ठूँस-ठूँसकर न खाना, मित द्रव्य खाना—बहुत वस्तुएँ एक साथ न खाना, मित समय में खाना—समूचे दिन खाते ही न रहना, मिर्च-मसाले आदि उत्तेजक वस्तुएँ न खाना—ये आहारशुद्धि के उपाय हैं।  
 (१७) स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु और श्रोत का अपने-अपने विषयों (स्पर्श, रस, गंध, रूप और शब्द) के प्रति जो सम्यग् योग होता है—निर्विकार और शांतप्रवृत्ति होती है, वह इंद्रिय-शुद्धि का उपाय है।  
 (१८) प्रतिसंलीनता भी इंद्रिय-शुद्धि का उपाय है।  
 (१९) प्राणायाम, समतालश्वास, दीर्घश्वास और कायोत्सर्ग के द्वारा श्वासोच्छ्वास की शुद्धि होती है।  
 (२०) कायोत्सर्ग आदि आसनों, मूलबंध, उड्डियानबंध, जालंधर-बंध, व्यायाम और प्राणायाम के द्वारा काय की शुद्धि होती है।  
 (२१) निर्लेपता के द्वारा भी काय की शुद्धि होती है।  
 (२२) ॐ, अर्ह आदि शब्दों के लंबे उच्चारण से वाणी की शुद्धि होती है।  
 (२३) दृढ संकल्प करने व एक लक्ष्य पर स्थिर होने से मन की शुद्धि होती है।

### योग

**प्रश्न :** क्या जैन साहित्य में 'योग' शब्द का व्यवहार हुआ है?

**उत्तर :** जैन साहित्य में 'योग' शब्द का व्यवहार अनेक रूपों में हुआ है—अध्यात्मयोग, भावनायोग, संवरयोग, ध्यानयोग आदि। सूत्रकृतांग जैसे प्राचीन सूत्र में 'योग' शब्द का व्यवहार हुआ है। जैन तत्त्वविद्या में मन, वाणी और शरीर की प्रवृत्ति को भी योग कहा गया है। उसका प्रयोग बहुत प्रचलित है, इसलिए साधना के अर्थ में संवर या प्रतिमा का प्रयोग अधिक प्रचलित है।

जैन तत्त्व-विद्या के अनुसार हमारे जीवन के छह शक्ति-स्रोत (पर्याप्तियाँ) और दस शक्ति-केंद्र (प्राण) हैं।

(१) आहार पर्याप्ति, (२) शरीर पर्याप्ति, (३) इंद्रिय पर्याप्ति, (४) श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति, (५) भाषा पर्याप्ति, (६) मनःपर्याप्ति।

(क्रमशः)

## साँसों का इकतारा

□ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा □

(११८)

कब सोचा था इस जीवन में  
बिना तुम्हारे जीना होगा।  
इमरत की अभिलाषा थी पर  
कभी गरल भी पीना होगा।।

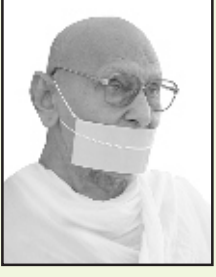
कड़ी धूप से झुलस रहा तन  
शीतल छाया मिली तुम्हारी  
आया नव चैतन्य सूरों में  
जुड़ी सहज तुमसे इकतारी  
पीड़ा से बोझिल मानस को  
तुमने ही हँसना सिखलाया  
भटके-बहके श्लथ कदमों को  
निर्यातक सत्पथ दिखलाया  
कब सोचा इस परिचय का पट  
सचमुच इतना झीना होगा।।

जो बैसाखी मिली देव से  
उसके ही बल पर चलना है  
अपने पैरों से चलने की  
करें कल्पना यह छलना है  
जो भी सीख सुनाई तुमने  
रोम-रोम में वह रम जाए  
बही धार अविरल विकास की  
वह क्यों कभी कहीं थम पाए  
कब सोचा हर बोल तुम्हारा  
कुंदन जड़ा नगीना होगा।।

साँस-साँस में दर्द भरा है  
कैसे उसको सहन करें अब  
गुमसुम है प्राणों की वीणा  
कैसे उसकी पीर हरे हम  
तुम आए थे राही बनकर  
हमने शाश्वत मान लिया था।  
अर्हत् के प्रतिरूप देव तुम  
बस इतना पहचान लिया था।  
कब सोचा मुखरित अधरों को  
कभी अचानक सीना होगा।।

सूरज उस दिन भी उदियाया  
ठीक समय पर लिए उजाला।  
पता नहीं किस मंसूबे से  
उगली उसने विष की ज्वाला।  
खुली खिड़कियाँ देख सामने  
हौले से वह घुसी कक्ष में  
नजर लगा दी निमिष मात्र में  
मिला स्वास्थ्य जो एक पक्ष में।  
कब सोचा यों क्रूर काल का  
वह युगपुरुष चबीना होगा।।

(क्रमशः)



## संबोधि

### □ आचार्य महाप्रज्ञ □ बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(१५) अप्रमाणं न भुञ्जीत, न भुञ्जीताप्यकारणम्।  
श्लाघां कुर्वन्न भुञ्जीत, निन्दन्नपि न चाहरेत्॥

मुनि मात्रा से अधिक न खाए, निष्कारण न खाए, सरस भोजन की सराहना और नीरस भोजन की निंदा करता हुआ न खाए।

इस श्लोक में भोजन करने का विवेक दिया गया है। आयुर्वेद में भी आहार के तीन प्रकार बताए गए हैं—हीनाहार, मिताहार और अति आहार। मिताहार स्वास्थ्य के अनुकूल होता है। हीनाहार और अतिआहार स्वास्थ्य के प्रतिकूल होता है। यद्यपि कुछ व्यक्तियों का विश्वास है कि हीनाहार से पाचन-क्रिया ठीक होती है, पर आयुर्वेद की दृष्टि से वह सही नहीं है जैसा कि कहा गया है—

‘हीन आहार से बल, सौंदर्य और पुष्टता नष्ट होती है। आयुष्य और ओज की हानि होती है। शरीर, मन, बुद्धि और इंद्रिय का विनाश होता है तथा अस्सी प्रकार के वायु रोग उठ खड़े होते हैं।

आयुर्वेद में कहा है—

आहारमग्निः पचति, दोषानाहारवर्जितः।

धातून् क्षीणेषु दोषेषु, जीवितं धातुसंक्षये॥

‘अग्नि आहार को पचाती है। आहार के अभाव में वह दोषों को पचाती है। दोष क्षीण होने पर वह धातु को और धातुओं के क्षीण होने पर वह जीवन को लील जाती है।’

आहार कैसे करें?—स्वास्थ्यविदों ने भोजन करने की कुछ विधियाँ निश्चित की हैं। वे बहुत उपयोगी हैं। उनमें पहली विधि यह है—

(१) तन्मना भुंजीत—आहार करते समय मन आहार में ही रहना चाहिए।

(२) नातिद्रुतमश्नीयात्—बहुत जल्दी-जल्दी नहीं खाना चाहिए।

(३) नातिविलम्बितमश्नीयात्—बहुत धीरे-धीरे नहीं खाना चाहिए।

(४) अजल्पन् अहसन् तन्मना भुंजीत—भोजन करते समय न बातचीत करनी चाहिए और न हँसना चाहिए। मन केवल भोजन में रहना चाहिए।

ईर्ष्याभयक्रोधपरिक्षतेन लुब्धेन रुग्दैर्न्यनिपीडितेन।

प्रद्वेषयुक्तेन च सेव्यमानमन्नं न सम्यक् परिपाकमेति॥

मात्रयाप्यभ्यवहृतं, पथ्यं चान्नं न जीर्यति।

चिन्ताशोकभयक्रोधदुःखशय्याप्रजागरैः॥

—‘भाजन करते समय मन शांत रहना चाहिए। क्योंकि ईर्ष्या, भय, क्रोध, लोभ, रोग, दीनता, प्रद्वेष, चिन्ता, शोक, दुःख-शय्या और रात्रि-जागरण—इन अवस्थाओं से प्रभावित व्यक्ति जो खाता है उसका ठीक-ठीक परिपाक नहीं होता। वह यदि पथ्य आहार करता है और युक्त मात्रा में करता है, फिर भी उसका खाया हुआ भोजन उचित रूप में नहीं पचता।’

मेघः प्राह

(१६) जायन्ते ये प्रियन्ते ते, मृताः पुनर्भवन्ति च।  
तत्र किं जीवनं श्रेयः, श्रेयो वा मरणं भवेत्॥

मेघ बोला—जिनका जन्म होता है, उनकी मृत्यु होती है। जिनकी मृत्यु होती है, उनका पुनः जन्म होता है। ऐसी स्थिति में जीना श्रेय है या मरना?

(क्रमशः)

## अवबोध

### □ मंत्री मुनि सुमेरुमल ‘लाडनू’ □ धर्म बोध

तप धर्म

प्रश्न ८ : क्या दस प्रत्याख्यान अनशन के अंतर्गत हैं?

उत्तर : दस प्रत्याख्यान के नाम इस प्रकार हैं—

(१) नवकारसी, (२) पोरसी, (३) पुरिमार्ध, (४) एकासन, (५) एकस्थान, (६) निर्विगय, (७) आर्यबिल, (८) उपवास, (९) दिवस चरिम, (१०) अभिग्रह।

इनमें निर्विगय और आर्यबिल रस परित्याग, उपवास अनशन के अंतर्गत हैं जबकि अवशिष्ट सात ऊनोदरी के अंतर्गत आते हैं।

(क्रमशः)

## उपासना

(भाग - एक)



### □ आचार्य महाश्रमण □ आचार्य तुलसी

नैतिक क्रांति, मानसिक शांति और व्यक्तित्व निर्माण की पृष्ठभूमि पर गुरुदेव तुलसी ने तीन अभियान चलाए—अणुव्रत आंदोलन, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान। ये तीनों ही अभियान उस समय युग के लिए बहुत अपेक्षित थे। ये आज भी युगीन समस्या के समाधान के रूप में प्रतिष्ठित बने हुए हैं। अणुव्रत जाति, लिंग, रंग, संप्रदाय आदि के भेदों से ऊपर उठकर मानव मात्र को चारित्रिक मूल्यों के संकट से उबारने का उपक्रम है। प्रेक्षाध्यान मानसिक एवं शारीरिक तनावों से ग्रसित मानवीय चेतना को शांति के पथ पर अग्रसर कर रहा है। जीवन विज्ञान के प्रयोग व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है एवं शैक्षिक जगत् की समस्याओं का समीचीन समाधान है।

गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत के मंच से मानवीय शांति एवं सद्भावना के अनेक कार्यक्रम आयोजित किए। उनके उदार चिंतन में संपूर्ण विश्व के कल्याण की कामना थी। फलस्वरूप उनके सान्निध्य में कई अंतर्राष्ट्रीय शांति सम्मेलन आयोजित हुए। प्रथम अंतर्राष्ट्रीय शांति सम्मेलन जो ‘शांति एवं अहिंसक उपक्रम पर प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन’ के नाम से विश्रुत हुआ, उस सम्मेलन में तीस देशों के लगभग एक सौ पचास प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। उस सम्मेलन में जातीय एवं धार्मिक उन्माद, हिंसा तथा आणविक युद्ध के बढ़ते हुए खतरों से मानव जाति को मुक्त करवाने के लिए ‘लाडनू घोषणा पत्र’ इस नाम से एक सर्वसम्मति से शांति प्रारूप स्वीकृत हुआ जिसकी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहना हुई। राजसमंद (मेवाड़) में भी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन पर ‘अहिंसा प्रशिक्षण पर राजसमंद घोषणा’ की स्वीकृति महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। इस प्रकार गुरुदेव तुलसी ने अपने बहुआयामी व्यक्तित्व से मानव जाति के कल्याण के लिए विभिन्न उपक्रम प्रस्तुत किए।

धर्मक्रांति और सांप्रदायिक सद्भाव उनके महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में एक था। उनके अभिमत में धर्म का सबसे पवित्र स्थान मंदिर, मस्जिद, चर्च आदि धर्मस्थान नहीं बल्कि मनुष्य का अपना अंतःकरण है। वे रूढ़ धर्म के नहीं, जीवन्त धर्म के परिपोषक थे। उन्होंने कहा—‘मुझे ऐसा धार्मिक नहीं चाहिए जो धर्मस्थान में बैठकर भक्त प्रह्लाद और मीरा की भक्ति प्रदर्शित करे और घर, दुकान एवं ऑफिस में बैठकर राक्षसी वृत्तियाँ प्रकट करे। ‘धर्म करने का अधिकार जितना एक महाजन को है, उतना ही एक हरिजन को है।’ उनके इन क्रांतिकारी विचारों ने बौद्धिक मानस में धार्मिकता का संचार किया और नास्तिक चेतना में भी आस्तिकता की लौ जलाई।

सांप्रदायिक सद्भाव की दिशा में वे सतत प्रयत्नशील रहे। यद्यपि वे एक संप्रदाय के आचार्य थे पर सांप्रदायिकता उनके विचारों पर कभी हावी नहीं हुई। वे अपने परिचय में कहते थे—‘मैं सबसे पहले मानव हूँ, उसके बाद धार्मिक हूँ, उसके बाद जैन हूँ और उसके बाद तेरापंथ का आचार्य हूँ।’ आचार्य तुलसी के इन्हीं क्रांतिकारी विचारों का परिणाम कहा जा सकता है कि जो तेरापंथ एक संघीय सीमा में आबद्ध था, वह न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर सका है। तेरापंथ के सिद्धांतों को युग की भाषा में रखकर उसे जन-जन की आस्था का केंद्र बनाना गुरुदेव तुलसी के युग की महान् उपलब्धि रही।

नारी-जागरण, संस्कार-निर्माण, रूढ़ि-उन्मूलन एवं सामाजिक बुराइयों के बहिष्कार हेतु वे सतत प्रयत्नशील रहे। नए और प्राचीन मूल्यों में समन्वय स्थापित कर उन्होंने नई और पुरानी पीढ़ी के बीच एक सेतु का काम किया।

आचार्य तुलसी एक क्रांतिकारी युगपुरुष थे। क्रांति के साथ प्रायः विरोध का सह-अस्तित्व देखा जाता है। गुरुदेव तुलसी के क्रांतिकारी कदमों का विरोध भी कम नहीं हुआ। उनके जीवन में विरोध और अभिनंदन दोनों की पराकाष्ठा रही। एक तरफ उन्हें विश्वव्यापी सम्मान मिला तो विरोध भी कम नहीं मिला। पर वे सम्मान और विरोध दोनों में सदाबहार फूल की भाँति एकरूप रहे।

वे महान् पदयात्री थे। लगभग साठ हजार किलोमीटर पदयात्रा कर पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण भारत के अधिकांश भू-भाग में उन्होंने नैतिकता की लौ प्रज्वलित की। उनके युग में तेरापंथ का क्षेत्र-विस्तार बहुत व्यापक स्तर पर हुआ। भारत के प्रायः सभी प्रांतों में तथा भारत के बाहर भूटान, नेपाल में भी साधु-साध्वियों ने जाकर अणुव्रत के संदेश को पहुँचाया।

(क्रमशः)



## प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

गोरेगाँव (मुंबई)।

प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षक के०वी० देशमुख, विनोद एवं मीना बाफना, किरण कोठारी के मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण में अणुव्रत सभागार के प्रांगण में प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई।

तत्पश्चात प्रशिक्षक भाई-बहनों ने अपने वक्तव्य द्वारा प्रेक्षाध्यान की कार्यशाला लेते हुए हर शब्द का अर्थ समझाते हुए विस्तार से प्रकाश डाला। प्रेक्षाध्यान शिविर में लगभग ४० भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

तृतीय चरण में पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस के अवसर पर तेजस उत्कर्ष कार्यशाला का आयोजन किया गया। शांतिलाल बाफना, रमेश राठौड़, अशोक चौधरी ने सामूहिक संगान द्वारा प्रभु पार्श्व स्तुति में कार्यक्रम की शुरुआत की। तत्पश्चात प्रभु पार्श्वनाथ का सामूहिक जप अनुष्ठान किया गया।

सभी के प्रश्नों एवं जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। तत्पश्चात उत्कर्ष कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें १६ प्रतिभागियों ने परीक्षा दी।

कार्यक्रम को सफल बनाने में सभा अध्यक्ष चतर सिंघवी, तेयुप अध्यक्ष रमेश सिंघवी, महिला मंडल संयोजिका कांता सिसोदिया एवं सभा, तेयुप, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला परिवार एवं पूरे समाज का अच्छा सहयोग एवं अच्छी उपस्थिति रही।

## मुनि शांति कुमार जी की स्मृति में गुणानुवाद सभा

गंगाशहर।

तेरापंथी सभा द्वारा मुनि शांति कुमार जी स्वामी की स्मृति में मुनि श्रेयांस कुमार जी व सेवाकेंद्र व्यवस्थापिका साध्वी कीर्तिलता जी एवं साध्वी ललितकला जी के सान्निध्य में शांति निकेतन, गंगाशहर में गुणानुवाद सभा रखी गई। इस अवसर पर सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी कीर्तिलता जी ने उनके गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि शारीरिक अस्वस्थता और बीमारी को देखते हुए उनका मनोबल बहुत दृढ़ था और लोगों को निरंतर प्रेरणा दिया करते थे।

मुनि विमल बिहारी जी तथा मुनि प्रबोध कुमार जी ने अनेक संस्मरण सुनाए। मुनि श्रेयांस कुमार जी ने गीतिका के माध्यम से अपनी भावनाएँ व्यक्त की। इस अवसर पर साध्वी प्रभाश्री जी, साध्वी ध्रुवरेखा जी, साध्वी लाभवती जी ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वियों ने सामूहिक गीतिका प्रस्तुत की। सुजानगढ़ से समागत मुनि शांति कुमार जी के संसारपक्षीय भतीजे हेमराज नाहटा ने मुनिश्री के जीवन के अनेक पहलुओं को प्रस्तुत किया।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद्र

सोनी, तेरापंथ न्यास के ट्रस्टी व जैन महासभा के अध्यक्ष लूणकरण छाजेड़, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के मंत्री हंसराज डागा, तेयुप परिषद से रोहित बैद, तेमम से मधु छाजेड़, अणुव्रत समिति मंत्री भंवरलाल सेठिया, सुंदरलाल झाबक, शांतिलाल बोथरा, मोहनलाल भंसाळी, सूरजमल संचेती आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। पूज्यप्रवर से प्राप्त संदेश का वाचन सभा के वरिष्ठ सदस्य चंद्र कुमार राखेचा ने किया। कार्यक्रम का संचालन देवेन्द्र डागा ने किया।

## अनुशासन जीवन विकास का पहला द्वार

कोपल।

मुनि अर्हत कुमार जी ने श्री शारदा इंटरनेशनल स्कूल, कोपल में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि जीवन अच्छा बनाने के लिए सबसे पहले अपने आपको अनुशासित और मर्यादित बनाएँ। आग्रह वृत्ति से दूर रहें, पढ़ाई को ही अपना एकमात्र लक्ष्य बनाएँ।

एकाग्रचित्त होकर विद्या का अर्जन करें। रोज सुबह उठकर अपने से बड़ों को आशीर्वाद लेना चाहिए, बच्चों को कभी गुस्सा नहीं करना चाहिए। इससे हमारी बुद्धि की शक्ति का ह्रास होता है। हमेशा अच्छे संस्कारों का अर्जन करें, अपनी प्रतिभा का विकास करें। नशामुक्त जीवन जिएँ अच्छी सोहबत में रहें, यह आपका जीवन महका देगी।

मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि बच्चों को विवेक चेतना जागृत करनी चाहिए, जिससे हमारे भाग्य जग जाएँगे। बच्चों का जीवन उन्नत हो सकेगा। बाल संत जयदीप कुमार जी ने अपने विचार व्यक्त किए। मुनिश्री ने सभी बच्चों को नशामुक्ति के संकल्प करवाए।

## जैन धर्म की दो आध्यात्मिक धाराओं का मिलन

चेन्नई।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी गुरु आज्ञा से साहूकारपेट, चेन्नई का चातुर्मास परिसंपन्न कर विहाररत हैं। वर्धमान जैन विहार धाम, अग्रहम में पधारे। विहार धाम में श्री जैन दिगंबर परंपरा के गुरुणी विज्ञश्री जी की शिष्याएँ आर्यिका माताजी ज्ञेश्री जी के साथ आध्यात्मिक मिलन हुआ। दोनों ओर से सौहार्दपूर्ण अभिवादन के साथ काफी समय तक आध्यात्मिक चर्चा-परिचर्चा चली। आर्यिका माताजी ने जहाँ जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्म की एक गुरु के आज्ञा, अनुशासन में चलने के साथ गुरु द्वारा संतों की तरह ही नहीं अपितु उससे ज्यादा भी शिक्षा, सेवा, साहित्य सृजन में साध्वियों को भी आदर भाव, सम्मान के

साथ विकास के रास्ते पर अग्रसर करते हैं, उनकी सराहना की। श्रावक-श्राविकाओं का भी गुरु ही नहीं अपितु हर साधु-साध्वियों की सेवा में सजग, संलग्न रहते हैं। उसके लिए श्रावक समाज को साधुवाद दिया।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि दिगंबर परंपरा का जैन साहित्यिक संरक्षण में बड़ा योगदान है। हमारे गुरु हमें श्वेतांबर साहित्य के साथ दिगंबर साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन करवाते हैं। स्वयं जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय में जैन धर्म और तुलनात्मक दर्शन में विशेष अध्ययन करवाया जाता है। हमारी साधना के रास्ते अलग-अलग हैं, लेकिन लक्ष्य हम सबका एक ही है।

भगवान महावीर के बताए पाँच महाव्रतों की सम्यक् दृष्टि से पालना करते हुए स्वयं वीतरागता को प्राप्त करने की ओर गतिशील होना।

इस अवसर पर चेन्नई समाज से गौतम सेठिया, वनिता सेठिया, दिलीप गेलड़ा, संजय संकलेचा इत्यादि श्रावक-श्राविका समाज उपस्थित था।

◆ अभय के साथ क्षमा का योग है तो वह अभय का अलंकार है, शृंगार है। यदि उसके साथ आक्रोश जुड़ जाता है तो वह धब्बे वाले वस्त्र जैसा बन जाता है।

— आचार्यश्री महाश्रमण

## मुनि शांति कुमार जी स्वामी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

● मुनि रमेश कुमार ●

तेरापंथ धर्मसंघ में जन्म अपने आपमें भाग्य की बात है। इस धर्मसंघ में दीक्षित होना सौभाग्य की बात है। दीक्षित होकर गुरु दृष्टि के अनुरूप अपने आपको सेवा में समर्पित कर देने वाले परम सौभाग्यशाली होते हैं।

हमारे धर्मसंघ के ऐसे ही विनम्र, सेवाभावी, मिलनसार संत थे मुनि शांति कुमार जी स्वामी। आपका जन्म सुजानगढ़ में हुआ। लघुवय में परमपूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी से संयम रत्न स्वीकार किया। दीक्षित होने के पश्चात आप आचार्यश्री तुलसी के ज्येष्ठ भ्राता सेवाभावी चंपालाल जी स्वामी के गुप में काफी वर्षों तक रहे। उसके पश्चात शासनश्री मुनि सागरमल जी स्वामी 'श्रमण', शासन गौरव मुनि बुद्धमल जी स्वामी के जैसे प्रभावशाली संतों के गुप में रहने का सौभाग्य मिला। वैराग्यमूर्ति साधक, मुनि डूंगरमल जी स्वामी के सिंघाड़े में रहकर उनके हृदय को जीता। सरल स्वभावी मुनि चंपालाल जी स्वामी, मुनि नगराज जी स्वामी आदि अनेक संतों की तन, मन से समर्पण भाव से सेवा की। आपकी सेवाभावना से बीकानेर-गंगाशहर के सभी जन परिचित हैं। एक तरह से आपने अपने जीवन को सेवा के लिए ही समर्पित कर दिया था।

संघनिष्ठा के साथ आप मिलनसार संत थे। मेरे ऊपर सदैव आपका वात्सल्यमय कृपाभाव रहा। इन वर्षों में आप अस्वस्थ थे। आपके सहवर्ती संत मुनि श्रेयांस कुमार जी स्वामी, मुनि विमल बिहारी जी, मुनि प्रबोध कुमार जी ने उनकी अच्छी सेवा की।

मैं देवलोक हुए मुनि शांति कुमार जी स्वामी के प्रति विनम्र भावों से आत्म-कल्याण की मंगलकामनाएँ करता हूँ।

## मुनि शांति कुमार जी - हृदयांकित कर्तृत्व

● 'नचिकेता' मुनि अनुशासन कुमार ●

आचार्यवर की पावन अनुकंपा से गत पावस २०२२ मुनि जितेंद्र कुमार जी के अग्रगण्य में गंगाशहर में करने का अवसर प्राप्त हुआ। चातुर्मास काल में मुनि शांति कुमार जी का संयोग एक दुर्लभ सुयोग बनकर प्रस्तुत हुआ। रत्नाधिक मुनिश्री का वात्सल्य भाव, शांत स्वभाव, मृदु वाणी एवं सदा इतिहास की घटनाओं से प्रेरणा देना जीवन की एक अमूल्य निधि बनी। पूर्व में कभी मुनिश्री का इतना सान्निध्य प्राप्त नहीं हुआ था, किंतु यह पावस के चार माह में मुनिश्री का अपनत्व भाव इस प्रकार प्राप्त हुआ मानो मुनिश्री सदा से ही परिचित रहे हो।

पिछले कई वर्षों से मुनि शांति कुमार जी का प्रवास बीकानेर क्षेत्र में ही रहा। गुरुदेव श्री तुलसी के करकमलों से दीक्षित मुनिश्री ने अपना अंतिम प्रयाण भी अपने गुरु की अंतिम स्थली से ही किया। इसी वर्ष आचार्यप्रवर के मंगल दर्शन का भी मुनिश्री को सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुनिश्री की आत्मा जहाँ कहीं भी हो उत्तरोत्तर मोक्षश्री की ओर प्रवर्धमान होती रहे। कोटि-कोटि श्रद्धांजलि।

शांत चित्तता शांतिमुनि की, मुखमुद्रा मन भाती।  
मृदु वाणी कानों में गूँजे, स्मृतियाँ रह रह आती।।

वत्सलता बरसाते हर पल, बन माईत सहलाते।  
छवि सुदर्शन दर्शन करता, भावुक वह कर जाते।।

गंगाणे का पावन पावस, योग अनुपम पाया।  
गुरु आशीष मिला यह अवसर, संरक्षण शुभ छाया।।

स्वल्प काल सान्निध्य मिला पर, था वह सुखद सुहाना।  
हृदयांकित कर्तृत्व मुनि का, विरह युक्त यह जाना।।

## तत्त्वज्ञान तेरापंथ दर्शन परीक्षा का आयोजन साहूकारपेट, चेन्नई।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम, चेन्नई के तत्त्वावधान में आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत तत्त्वज्ञान तेरापंथ दर्शन परीक्षा का आयोजन तेरापंथ सभा भवन, साहूकारपेट में किया गया। दो दिवसीय परीक्षा में कुल २६ परीक्षार्थी संभागी बने।

परीक्षा का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुआ। तेमम अध्यक्ष पुष्पा हिरण ने सभी परीक्षार्थियों का स्वागत करते हुए सभी को शुभकामना, मंगलकामना प्रेषित की। इस आयोजना में राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्या माला कातरेला, दीपा पारख, महिला मंडल मंत्री रीमा सिंघवी, सहमंत्री कंचन भंडारी, संयोजिका प्रीति डूंगरवाल, कार्यसमिति सदस्य मंजु दक, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका दीपाली सेठिया उपस्थित थे।





## टीपीएफ के विविध कार्यक्रम

### टीपीएफ ने मेधावी छात्रों को किया सम्मानित

७६ छात्रों को जिनप्पा गुंडे नेशनल माइनोंरिटी कमीशन मेंबर जैन भारत सरकार ने सर्टिफिकेट और मेडल से किया सम्मानित दिल्ली।

टीपीएफ, दिल्ली की टीम द्वारा मेधावी छात्र सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। अणुव्रत भवन में शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी की उपस्थिति में कार्यक्रम हुआ। मेधावी छात्र सम्मान टीपीएफ की शैक्षिक परियोजनाओं का हिस्सा है। सपना जैन द्वारा शिक्षा परियोजना और कैरियर परामर्श के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ। राजेश कुमार जैन, टीपीएफ, दिल्ली अध्यक्ष ने छात्रों को प्रोत्साहित करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। दिल्ली के डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया ने इस अवसर पर मेल के माध्यम से शुभकामना संदेश भेजा।

मेधावी छात्र-छात्राओं को टीपीएफ गौरव के ०सी० जैन एवं उत्तर क्षेत्र अध्यक्ष विजय नाहटा द्वारा जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली। तत्पश्चात साध्वी शीलप्रभा जी ने छात्रों को मंगलभावना संदेश दिया। टीपीएफ के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि रजनीश कुमार जी ने आध्यात्मिक मार्गदर्शन किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि धन्य कुमार जिनप्पा गुंडे, एनसीएम सदस्य जैन अल्पसंख्यक भारत सरकार ने छात्रों से कहा कि यदि आप अनुशासित हैं तो छोटे शहरों और स्थानों से होने के बावजूद आप कहीं भी पहुँच सकते हैं। गेस्ट ऑफ ऑनर डॉ०

शालिनी आडवाणी, बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट पाथवे स्कूल ने छात्रों को सही कैरियर के चयन के बारे में मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम का संचालन टीपीएफ, दिल्ली की सचिव कविता बरडिया और श्रेणिक जैन वीपी ने किया।

७६ मेधावी छात्रों को पुरस्कार वितरित किए गए, इसमें से २२ स्वर्ण पदक विजेता, ३२ रजत पदक विजेता और २५ कांस्य पदक विजेता थे। कई छात्र-छात्राएँ ऐसे थे जिनके साथ उनके माता-पिता के साथ-साथ दादा-दादी भी थे। कुछ छात्र स्वयं इस कार्यक्रम में शामिल नहीं हो सके, लेकिन उनके दादा-दादी, नाना-नानी, प्रतिनिधियों ने पुरस्कार प्राप्त किया। दादा-दादी को अपने पोते की ओर से पुरस्कार लेते हुए देखना वास्तव में गर्व का क्षण था।

६७ प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने पर पहली श्रेणी यानी गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी पुरस्कार में गोल मेडल पाने वाले सात छात्रों में लक्ष्य भंसाली, निहारिका सुराणा, निष्ठा जैन, नूपुर जैन, सांची सिंघल, सीरत जैन और यश दुगड़ हैं।

मेधावी हर्षिता धारीवाल और मेधावी हर्षिता सेठिया ने टीम निर्माण गतिविधि में पुरस्कार जीता। छात्रों के लिए एक प्रश्नोत्तरी

का भी आयोजन किया गया, यश ने पहला पुरस्कार, पीयूष तातेड़ ने दूसरा पुरस्कार और तुषि सेठिया ने तीसरा पुरस्कार जीता। मेधावी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के छह विजेताओं को प्रीति जैन द्वारा प्रायोजित उपहार, तारा देवी गेलड़ा और निर्मला बैद ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल ने इस अवसर पर सभी मेधावी छात्रों को शुभकामना संदेश दिया। कार्यक्रम के संयोजक रतन लोढ़ा थे। मन्नालाल निलेश बैद, अशोक कुमार दुगड़ और सुशील कुमार जैन ने मेधावी छात्र सम्मान समारोह कार्यक्रम को प्रायोजित किया। प्रशंसा के प्रतीक के रूप में सभी प्रायोजकों को स्मृति चिह्न प्रदान किया गया।

इस अवसर पर टीपीएफ गौरव संपतमल नाहटा, जीतो उत्तर क्षेत्र अध्यक्ष बजरंग बोथरा, दिल्ली सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया, दिल्ली तेयुप अध्यक्ष विकास सुराणा, सभा उपाध्यक्ष लक्ष्मीपत बोथरा, बाबूलाल दुगड़, दक्षिण सभा अध्यक्ष हीरालाल गेलड़ा, अणुव्रत महासमिति पूर्व अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा उपस्थित थे।

टीपीएफ परिवार की ओर से टीपीएफ उत्तर क्षेत्र से अनेक पदाधिकारीगण, सदस्य, कार्यकारिणी सदस्यगण उपस्थित थे।



## ज्ञानशाला कार्यक्रमों के आयोजन



### ज्ञानशाला सार-संभाल

हिंदमोटर।

तेरापंथी सभा, हिंदमोटर ज्ञानशाला का सार-संभाल कार्यक्रम का आयोजन पारस भवन में वृहद् कोलकाता, दक्षिण बंगाल ज्ञानशाला आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरडिया, सह-संयोजक संजय पारख, कार्यकारिणी समिति सदस्य मालचंद भंसाली, क्षेत्रीय संयोजिका मंजु घोड़ावत की उपस्थिति में उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ। हिंदमोटर सभा के पूर्व अध्यक्ष गुलाबचंद बाफना, संरक्षक धनपत भूतोडिया, अध्यक्ष मनोज कुंडलिया, हिंदमोटर ज्ञानशाला के संयोजक मनोज छल्लाणी, मुख्य प्रशिक्षिका मंजु बाई भंसाली सहित अनेक गणमान्य अभिभावकों की उपस्थिति में ज्ञानार्थियों ने प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से सभा के पूर्व अध्यक्ष गुलाबचंद बाफना द्वारा किया गया। तत्पश्चात हिंदमोटर ज्ञानशाला का सार-संभाल का कार्यक्रम डॉ० प्रेम बाई चोरडिया एवं उनकी टीम द्वारा निरक्षण किया गया। ज्ञानशाला के बच्चों ने बहुत उत्साहपूर्वक प्रश्नों के जवाब दिए। अध्यक्ष मनोज कुंडलिया द्वारा सभी बच्चों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

### वार्षिकोत्सव व पिकनिक कार्यक्रम का आयोजन टॉलीगंज।

तेरापंथी सभा के अंतर्गत ३ ज्ञानशाला का संचालन हो रहा है। सभा के नेतृत्व में ज्ञानशाला का वार्षिकोत्सव एवं पिकनिक का आयोजन सेंट्रल जेल म्युजियम में किया गया। सभा अध्यक्ष अशोक पारख, मंत्री राजीव दुगड़, ज्ञानशाला संयोजक विनय सेठिया, मुख्य प्रशिक्षिका सरोज पारख एवं ज्ञानशाला कमेटी सदस्य सभी ज्ञानार्थी, ३५ प्रशिक्षिका व अभिभावक सब मिलाकर ५७ सदस्यों की सहभागिता रही।

अभिभावकों ने कार्यक्रम को सराहा और कहा कि ऐसे आयोजन में बच्चों को एक ऊर्जा प्राप्त होती है। तेयुप, टॉलीगंज ने व्यवस्था पक्ष में पूरा सहयोग प्रदान किया। साउथ कोलकाता क्षेत्रीय संयोजक प्रकाश दुगड़ भी उपस्थित थे। टॉलीगंज ज्ञानशाला संयोजक विनय सेठिया एवं मुख्य प्रशिक्षिका सरोज पारख के अथक प्रयासों से आयोजन सफल रहा।

### ज्ञानशाला प्रशिक्षिका बहनों की शुद्धिकरण परीक्षा संपन्न

गोरेगाँव (मुंबई)।

तेरापंथ भवन के प्रांगण में नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए बाहर से पधारी ५ ज्ञानशाला प्रशिक्षिका बहनों की उपस्थिति में जॉन लेवल पर ज्ञानशाला की ३५ प्रशिक्षिका बहनों ने शुद्धिकरण की परीक्षा दी।

मुंबई कार्यकारिणी से अंजु चौधरी, तेयुप अध्यक्ष रमेश सिंघवी, महिला मंडल संयोजिका कांता सिसोदिया एवं ज्ञानशाला संयोजक संपत सांखला आदि की उपस्थिति में परीक्षा के पेपर खोले गए।

शुद्धिकरण पर विशेष प्रयास करते हुए ज्ञानशाला के बच्चों के पेपर से पहले प्रशिक्षिका बहनों ने पेपर दिए। कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजिका नीलम, सह-संयोजिका भावना सांखला, अल्का, चतरदेवी, अंजु, दृष्टि चौधरी आदि सभी पदाधिकारीगण एवं पूरे समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

## संतों का भव्य स्वागत एवं ध्वज हस्तांतरण कार्यक्रम

बारीपदा।

मुनि जिनेश कुमार जी के प्रथम बार बारीपदा शहर में पधारने पर स्थानीय तेरापंथ जैन परिवारों द्वारा दूर तक अगवानी कर भावभीना स्वागत किया। इस अवसर पर नगरपालिका के चेयरमैन कृष्णानंद महाति मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर कटक तेरापंथी सभा द्वारा कोलकाता तेरापंथी सभा को सेवा का दायित्व ध्वज हस्तांतरित कर प्रदान किया गया।

इस अवसर पर कटक, कोलकाता, कोलाघाट, बालेश्वर, बेटनटी आदि क्षेत्रों से अच्छी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित थे। मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि धर्म का मूल सूत्र है—पाप से बचो। पाप से बचने का उपाय है—अध्यात्म। अध्यात्म से तात्पर्य है—आत्मा में रहना। आत्मा में रहने का पहला सूत्र है—सद्भावना। हमारे भाव अच्छे रहें।

मुनिश्री ने आगे कहा कि नैतिकता

सार्वभौम तत्त्व है। नीति न्याय के मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति सुख और आनंद का अनुभव करता है। मुख्य अतिथि कृष्णानंद माहंति ने बारीपदा में संतों का स्वागत करते हुए कहा कि संत हमें हमारे कर्तव्य के बारे में सचेतन करते हैं।

कार्यक्रम का शुभारंभ बाल मुनि कुणाल कुमार जी के मंगलाचरण से हुआ। बारीपदा तेममं एवं बेटियों द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। श्रेयांस एवं प्रिया दुगड़ ने लघु

परिसंवाद प्रस्तुत किया। अनूप दुगड़ ने स्वागत भाषण दिया। तेरापंथी सभा, कटक के अध्यक्ष मोहनलाल सिंधी, तेरापंथी सभा, कोलकाता के अध्यक्ष अजय भंसाली, आंचलिक प्रभारी तेजकरण बोथरा सहित अनेक पदाधिकारीगणों ने अपने विचार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन कटक तेरापंथी सभा के मंत्री चैनरूप चोरडिया ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। अतिथियों का सम्मान किया गया।

## अणुव्रत कार्यक्रम का आयोजन

जसोल।

राजकीय प्राथमिक विद्यालय भील बस्ती, जसोल में अणुव्रत समिति के द्वारा अणुव्रत धारण करने हेतु कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें भंवरलाल भंसाली पूर्व सरपंच जसोल ने मुख्य अतिथि के रूप में अणुव्रत के महत्त्व को समझाते हुए नशीले पदार्थों से होने वाली हानि के बारे में बताया एवं अणुव्रत समिति अध्यक्ष पारसमल गोलेछा व अणुव्रत प्रभारी भूपत कोठारी द्वारा विद्यार्थियों को संयमित एवं सदाचार युक्त जीवन का महत्त्व बताया गया।

अध्यापकगण एवं अध्यापिकाओं का अणुव्रत दुपट्टा पहनाकर सम्मान किया गया। विद्यार्थीगणों द्वारा अणुव्रत संकल्प पत्र भरे गए। इस कार्यक्रम के दौरान भामाशाह परिवार, दिलीप कुमार, अमित कुमार, रोहित कुमार बागरेचा (करनूल), जसोल द्वारा विद्यार्थियों को पोशाकें वितरित की गईं एवं विद्यालय में जाजम भेंट की गईं। संस्था प्रधान लीला खत्री, कमला चौधरी, पुष्पा चौधरी, जगतार सिंह, कमला आदि कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन श्रवण कुमार द्विवेदी ने किया।

♦ समता की साधना जैन-अजैन सबके लिए उपयोगी होती है। समता धर्म है और विषमता पाप है।

♦ आस्तिक विचारधारा का आधार अध्यात्म है, जबकि नास्तिक विचारधारा भौतिकवाद से संपृक्त है।

— आचार्यश्री महाश्रमण



## तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

### यूथ कनेक्ट सेमिनार का आयोजन

#### अहमदाबाद।

मुनि डॉ० पुलकित कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप, अहमदाबाद के तत्वावधान में यूथ कनेक्ट सेमिनार (वेस्ट जोन) का आयोजन नवरंगपुरा में किया गया। नवोन्मेषी संगठन यात्रा के यूथ कनेक्ट सेमिनार (वेस्ट जोन) का शुभारंभ मुनिश्री के महामंत्र उच्चारण से हुआ।

सुरेंद्र गीडिया ने गीत के द्वारा युवाओं में जोश भरने का प्रयास किया। तेयुप, अहमदाबाद के अध्यक्ष अरविंद संकलेचा ने स्वागत वक्तव्य देते हुए सेमिनार की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। अभातेयुप के सदस्य राजेश चोपड़ा ने तेयुप की विविध गतिविधियों को सबके समक्ष प्रस्तुत किया। मुनिद्वय का परिचय अभातेयुप सदस्य अपूर्व

मोदी ने दिया। नचिकेता आदित्य मुनि ने युवाओं को धर्मसंघ से कनेक्ट रहने की प्रेरणा प्रदान की।

मुनि पुलकित कुमार जी ने कहा कि युवाओं में जोश और होश के साथ विजन होना जरूरी है। युवा वर्ग के लिए असंभव जैसा कुछ भी नहीं होता। उसके भीतर (सिंपैथी) अर्थात् सहानुभूति के संस्कार तेरापंथ के गुरुओं द्वारा भरे जाते हैं तभी वह सेवा, संस्कार और संगठन जैसे जनउपयोगी आयामों से जुड़कर आत्म-कल्याण और पर-कल्याण की तरफ आगे बढ़ता है।

मुनिश्री ने सेमिनार में आगे कहा कि तेयुप, अहमदाबाद के सामने पूज्य गुरुदेव के पदार्पण का पावन अवसर आ रहा है।

तेयुप इस विजन के साथ चले कि हमें अहमदाबाद के प्रत्येक तेरापंथी युवा को कनेक्ट करना है।

सेमिनार में परिचय सत्र के अंतर्गत प्रथम बार सेमिनार में उपस्थित होने वाले अनेक युवाओं ने परिचय प्रस्तुत किया। 'सुझाव आपके क्रियान्वित हमारी' सत्र के अंतर्गत आगामी मार्च-२०२३ में होने वाले पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रवास में संघ प्रभावना के विविध उपक्रमों को कैसे आयोजित किया जाए, इस पर युवा कार्यकर्ताओं के महत्त्वपूर्ण सुझाव माँगे गए। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री जय छाजेड़ ने तथा आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री दिलीप भंसाली ने किया।

## प्रभु पार्श्व प्रणित आराधना के आयोजन

### राजाजीनगर

जैन दर्शन के २३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के जन्म कल्याणक के पौष कृष्ण पक्ष दशमी के अवसर पर पूरे विश्व में अभातेयुप द्वारा स्थानीय शाखा परिषदों के माध्यम से प्रभु पार्श्व प्रणित आराधना के अंतर्गत उपवास व जप किया गया। इसी के अंतर्गत तेयुप, राजाजीनगर द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में 'ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं पार्श्वनाथ नमः' का सामूहिक जप किया गया।

तेयुप प्रबंध मंडल, सदस्य एवं किशोरों द्वारा अच्छी संख्या में जप का क्रम सुचारु रूप से परीसंपन्न किया गया। लगभग २७ सदस्यों ने उपवास कर भगवान पार्श्वनाथ के प्रति अपनी अभ्यर्थना व्यक्त की।

### हैदराबाद

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा संस्कार के अंतर्गत प्रभु पार्श्व जन्म कल्याणक दिवस पौष कृष्ण पक्ष दशमी के अवसर पर जप का कार्यक्रम साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में सेवालाल मंदिर, देवी टांडा में एवं तेरापंथ भवन, डीवी कॉलोनी, सिकंदराबाद में रखा गया। कार्यक्रम में लगभग १५ सामायिक हुई व ५ उपवास हुए।

जप अनुष्ठान में सेवा प्रकोष्ठ प्रेम बैंगानी, संयोजक आसकरण सेठिया, निवर्तमान अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा, तेयुप पूर्व अध्यक्ष विमल पुगलिया, तेयुप अध्यक्ष विरेंद्र घोषल, अभातेयुप सदस्य मनीष पटावरी सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

### मंडिया

अभातेयुप निर्देशित मंडिया तेयुप द्वारा जैन धर्म तीर्थंकर प्रभु पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक के अवसर पर प्रभु पार्श्व प्रणित कार्यक्रम तेरापंथ सभा भवन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार महामंत्र से हुई। १४ उपवास एवं ११ एकासन हुए। तेयुप के अध्यक्ष प्रवीण दक ने उपस्थित श्रावक समाज का स्वागत अभिनंदन किया।

प्रभु पार्श्व प्रणित का कार्यक्रम जप अनुष्ठान के रूप में प्रारंभ हुआ जो लगभग १ घंटा चला। तत्पश्चात प्रभु पार्श्व स्तुति का संगान किया गया। किशन आच्छा ने अपने भाव रखे। सभा अध्यक्ष नरेंद्र दक, मंत्री महावीर भंसाली, किशन आच्छा, तेयुप अध्यक्ष प्रवीण दक, नेमीचंद सेठिया, नितिन भंसाली, कन्या मंडल, महिला मंडल अध्यक्ष पुष्पा बाफना, उषा आच्छा, सपना सेठिया, डिंपल भंसाली आदि अनेकजन उपस्थित थे। नरेंद्र, पुष्पा ने अपने भाव रखे। सभी का आभार ज्ञापन प्रवीण दक ने किया।

### सूरत

मुनि उदित कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में भगवान पार्श्वनाथ जयंती के उपलक्ष्य में विशेष अनुष्ठान व कार्यक्रम का आयोजन हुआ। मंगलाचरण के साथ प्रारंभ इस कार्यक्रम में मुनि अनंत कुमार जी व मुनि ज्योतिर्मय कुमार जी ने निर्धारित मंत्रों का जप करवाया।

मुनि रम्यकुमार जी ने पार्श्व स्तुति का संगान किया। मुनि उदित कुमार जी स्वामी ने अनुष्ठान करवाने के पश्चात मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि व्यक्ति के जीवन में घटनाएँ-दुर्घटनाएँ, क्रिया-प्रतिक्रिया होती रहती है। अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों से जीवन में मुखातिब होना पड़ता है। इन सभी स्थितियों में जो व्यक्ति तत्काल प्रतिक्रिया न कर चिंतनपूर्वक निर्णय लेता है वह व्यक्ति सफलता को छू सकता है।

पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक के अवसर पर उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ। श्रावक अनिल जैन ने आभार प्रकट किया। तेयुप के सदस्यों द्वारा भगवान पार्श्वनाथ का जाप किया गया। कार्यक्रम में उपस्थिति उल्लेखनीय थी।

## धम्म जागरण का आयोजन

#### मदुरै।

भिक्षु स्वामी की तेरस के उपलक्ष्य में स्थानीय तेरापंथ भवन में 'धम्म जागरण' का कार्यक्रम रखा गया। जिसमें सभा एवं तेयुप के सदस्यों ने गीत प्रस्तुत किए। तेरापंथ सभा अध्यक्ष अशोक जीरावला, तेयुप मंत्री अभिषेक कोठारी, भजन गायककार अमृतलाल चोपड़ा, सभा सहमंत्री जितेंद्र सुराणा, राजेश भंसाली आदि ने गीत प्रस्तुत किए।

◆ व्यवहार को सुधारने और बिगाड़ने में भाषा बहुत बड़ा निमित्त बनती है।

— आचार्यश्री महाश्रमण

## आचार्य तुलसी ब्लड बैंक का लोकार्पण

#### कोटकपुरा।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी स्वामी के पावन प्रवास में कोटकपुरा में कई नए कार्य हुए। गुरुदेव श्री तुलसी के ६७वें दीक्षा दिवस पर आचार्यश्री तुलसी ब्लड बैंक का लोकार्पण मुनिश्री के मंगलपाठ के पश्चात डॉ० रवि बंसल ने किया। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा कि जन्म के साथ ही आठ कर्मों का क्रम चालू रहता है, उसमें एक वेदनीय कर्म है, वह साधु हो या गृहस्थ किसी के उदय में आ सकता है, जब वेदनीय कर्म का उदय होता है तब व्यक्ति आत्मशरण से चिकित्सक शरण में जाना चाहता है। चिकित्सा के समय ब्लड की भी आवश्यकता हो सकती है। यह बैंक केवल तेरापंथी और जैन के लिए ही नहीं जन-जन के लिए उपयोगी होगा।

मुनिश्री के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद का शपथ ग्रहण का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें राजन जैन ने युवकों को शपथ दिलाई। रविवारीय जाप एवं ज्ञानशाला के साथ प्रातः भवन में सामूहिक सामायिक का क्रम बनाया।

## 'कैसे जिएँ टेंशन फ्री लाइफ' कार्यशाला का आयोजन

#### राजमुंद्री।

बोथरा भवन में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में 'कैसे जिएँ टेंशन फ्री लाइफ' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथी सभा, राजमुंद्री द्वारा किया गया। कार्यशाला में उपस्थिति अच्छी रही।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि दुनिया में शायद ही ऐसा इंसान हो जिसने टेंशन का स्वाद न चखा हो। चाहे विद्यार्थी हो, व्यापारी या और कोई सभी तनाव से ग्रसित हैं। टेंशन व्यक्ति के जीवन का घुन है, मानसिक शांति को मिटा देता है। यदि व्यक्ति

का संकल्प हो, चाहे कुछ भी हो सहज भाव से हर हाल में मस्त रहूँगा तो तनाव से दूर रहने में सफल हो सकते हैं।

मुनिश्री ने आगे कहा कि टेंशन फ्री लाइफ के लिए संतुलित जीवन शैली होनी चाहिए। प्रवृत्ति और निवृत्ति का संतुलन हो। जीवन चर्या व्यवस्थित हो। वर्तमान में जिएँ भविष्य की मायावी कल्पना से उड़ान न भरें। वर्तमान को अच्छा बनाएँ। प्रतिक्रिया मुक्त रहें। क्रिया की प्रतिक्रिया ना करें। प्रसन्न रहना सीखें। प्रसन्नता टेंशन फ्री लाइफ का बड़ा सूत्र है। हर परिस्थिति में

प्रसन्न रहें, प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करें।

बाल मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि तनाव आज के अतिव्यस्त जीवन से जन्मी एक भयंकर बीमारी है। हर व्यक्ति असंतुष्ट, अतृप्त और अधीर दिखाई दे रहा है। व्यक्ति के हर कदम पर तनाव पैदा करने वाली परिस्थितियाँ बिखरी हुई हैं। चारों तरफ तनाव ही तनाव है। तनाव के कारण व्यक्ति प्रभावित होता है, मन एवं भाव प्रभावित होते हैं। कायोत्सर्ग तनाव मुक्ति का अमोघ उपाय है। बाल मुनि ने बच्चे, युवा, वृद्ध कैसे तनाव में जाते हैं, उदाहरणों से समझाया।

## जरूरी है मानसिक और शारीरिक संतुलन

#### चंडीगढ़।

संतुलन दुनिया के तमाम तत्त्वों, व्यक्तियों, स्थलों और परिस्थितियों के लिए नितांत जरूरी है, तभी सभी अपने अस्तित्व और गुणवत्ता को बरकरार रख सकते हैं। इसी प्रकार इंसान के मन-मस्तिष्क और शरीर में संतुलन जरूरी है। पुरुषार्थ चतुष्टय के चार पाएँ—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष हैं और इनमें भी आनुपातिक संतुलन बने रहना जरूरी है। अपना कर्म करते रहें, इसके लिए यह जरूरी है कि इनकी शक्तियों और प्रवाह में आवश्यक संतुलन हर क्षण बना रहे। यह शब्द मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने अणुव्रत भवन, तुलसी सभागार में सभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

मुनिश्री ने आगे कहा कि इंसान के लिए जितना बैठकर काम करना जरूरी है, उतना चलना भी जरूरी है। जो लोग बैठे ही रहते हैं, अपनी कुर्सियों और व्हीलचेयर्स में धँसे ही रहते हैं, उन लोगों को भी चलना-फिरना, हिलना-डुलना जरूरी है। इनके संचालन की आनुपातिक निरंतरता होने पर ही व्यक्ति स्वस्थ और मस्त रह सकता है।

# अपनी शक्ति का उपयोग स्व-पर कल्याण के लिए करें : आचार्यश्री महाश्रमण



**जोधपुर, २२ दिसंबर, २०२२**

महायोगी आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः लगभग ५ किलोमीटर का विहार कर जोधपुर के सरदारपुरा क्षेत्र में पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि हमारे जीवन में शक्ति का बहुत महत्त्व होता है। शक्ति के बिना आदमी कुछ नहीं कर सकता है।

प्रश्न है कि शक्ति कैसे मिले? और

शक्ति का क्या उपयोग? वासुदेवों ने तो शक्तिशाली बनने का पूर्व जन्म में निदान कर दें, शक्तिशाली बने। अध्यात्म जगत में निदान करना अवांछनीय हो जाता है। संकल्प यह हो कि मुझे जो शक्ति मिलेगी या है, मैं अपने जीवन में कभी शक्ति का दुरुपयोग न करूँ। शक्ति का दुरुपयोग करने वाला दुर्जन आदमी होता है।

दूसरा संकल्प हो कि मैं अपनी शक्ति का सदुपयोग करने का प्रयास करूँ। मेरी

शक्ति किसी को चित्त समाधि और कल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ाने में योगभूत बने। शक्ति शरीर और मन दोनों की होती है। आदमी के आत्मबल जाग जाए तो यह बहुत ऊँची बात होती है। आचार्यश्री भिक्षु का आत्मबल-मनोबल बहुत मजबूत था। मनोबल-आत्मबल मजबूत हो तो कठिनाईयों को झेला जा सकता है।

दुनिया में तीन प्रकार के मनुष्य होते हैं। एक वे मनुष्य जो कठिनाईयों के भय से विघ्न-बाधाओं के भय से कोई अच्छे कार्य का प्रारंभ ही नहीं करते, उनमें आत्मबल नहीं होता है। वह निम्न श्रेणी का मनुष्य होता है। दूसरी कोटि का मनुष्य जो कार्य का प्रारंभ तो कर देता है, पर जब कठिनाईयाँ आती हैं, तो आगे नहीं बढ़ पाता है। वो मध्यम श्रेणी का मनुष्य होता है। उत्तम श्रेणी का मनुष्य वह होता है कि कार्य का प्रारंभ कर दिया, बार-बार विघ्न आते हैं, तो भी वह आदमी आगे बढ़ने का प्रयास करता है। घुटने नहीं टेकता।

साधु में आत्मबल होता है, तो साधु परिषदों को सहन कर सकता है। आज पौष कृष्णा चतुर्दशी है। चतुर्दशी को हाजरी का वाचन होता है। जोधपुर में तेरह की संख्या का निमित्त बना। तेरह साधु, तेरह श्रावक और तेरह ही साधुओं के नियम। हे! प्रभो यह तेरापंथ का प्रसंग जोधपुर से जुड़ा है। १९८४ के चातुर्मास में गुरुदेव तुलसी के साथ मैं भी यहीं था।

पूज्यप्रवर ने संक्षेप रूप में हाजरी का वाचन किया। पाँच महाव्रत, पाँच कीमती रत्न हैं। हम मर्यादाओं के प्रति जागरूक रहकर पालने का प्रयास करें। धर्म की रक्षा हम करेंगे तो धर्म हमारी रक्षा कर सकेगा। १९८४ के चातुर्मास के प्रसंग समझाए। मैं संभवतः चौथी बार जोधपुर आया हूँ। हम हाजरी से प्रेरणा लें और मर्यादाओं के प्रति जागरूक रहें। नव दीक्षित मुनि चिन्मय कुमार जी ने लेख-पत्र का वाचन किया। पूज्यप्रवर ने २१ कल्याणक बख्शाए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में जोधपुर का

महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। तेरापंथ के नामकरण के साथ-साथ यहाँ के श्रावकों ने विशेष स्थान बनाया है। वि०सं० १९२८ में पूज्य जयाचार्य का चातुर्मास जयपुर में था उस समय दिव्य वाणी हुई थी कि आपके तीन श्रावक तीर्थकर गौत्र का बंध करने वाले हैं। भैरूलाल सिंघड़, ताराचंद ढिलीवाल और बादरमल भंडारी संघ प्रभावना में उत्कृष्ट रसायन उनमें आया था और तीर्थकर गौत्र बंध के बारे में बताया जाता है। बहादुरमल भंडारी का विशेष इतिहास रहा है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में तेयुप सरदारपुरा द्वारा गीत, सभा से सुरेश जीरावला ने गीत के माध्यम से अपनी भावना अभिव्यक्त की। साध्वी सत्यवती जी के सिंघाड़े ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। साध्वी शशिप्रभा जी व अन्य साध्वियों ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

## भौतिक जीवन रूपी गाड़ी में रहे आध्यात्मिकता और नैतिकता रूपी ब्रेक : आचार्यश्री महाश्रमण

**जोधपुर बाहर, २० दिसंबर, २०२२**

परम जनोद्धारक आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः २२ किलोमीटर का विहार कर जिनेट परिवार परिसर में पधारे। मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए महातपस्वी आचार्यप्रवर ने फरमाया कि चौबीस तीर्थकरों में सोलहवें तीर्थकर भगवान शांतिनाथ हुए हैं। वे चक्रवर्ती और महान ऋद्धि संपन्न थे।

दुनिया में अध्यात्म के जगत में संभवतः सबसे बड़ा पद है तो तीर्थकर का है। भौतिक जगत का बहुत बड़ा व्यक्ति चक्रवर्ती होता है। जो मनुष्य एक ही जीवन काल में चक्रवर्ती बने और उसी जीवन काल में तीर्थकर भी बने, वह तो कितना बड़ा आदमी हो गया। भगवान शांतिनाथ ऐसे व्यक्तित्व थे जिन्होंने चक्रवर्ती और तीर्थकरत्व दोनों का प्रलण किया।

संसार की दृष्टि में भौतिकता बड़ी चीज हो सकती है, पर अध्यात्म के सामने भौतिकता बिलकुल छोटी चीज होती है। दुनिया का चक्रवर्ती आ जाए और साधु बैठा है तो वह अकिंचन साधु चक्रवर्ती के लिए पूजनीय है। साधु में त्याग है, जबकि

चक्रवर्ती तो श्रावक भी नहीं बन पाता है। गृहस्थ के पास अकूट धन है, पर साधु की साधना के सामने वह साधारण सा है। साधु के पास संयम का रत्न है।

धन आगे काम नहीं आता है, पर त्याग आगे काम आ सकता है। भौतिकता के जीवन पर आध्यात्मिकता का प्रभाव रहना चाहिए। नैतिकता और आध्यात्मिकता का कंट्रोल भौतिकता पर रहता है, तो भौतिकता की गाड़ी ठीक-ठाक चल सकती है। भौतिकता पर नैतिकता आध्यात्मिकता का ब्रेक नहीं है तो भौतिकता की गाड़ी खतरनाक सिद्ध हो सकती है।

गार्हस्थ्य और भौतिक जगत में धन का महत्त्व है। शांतिनाथ भगवान के तो नाम में ही शांति है। जीवन में पैसा है, और शांति नहीं है तो एक बड़ी कमी है। जीवन में पैसे से ज्यादा सेवा को महत्त्व दें। गृहस्थ जीवन में भौतिकता के साथ आध्यात्मिकता जुड़ी रहे तो गृहस्थ जीवन ठीक-ठाक चल सकेगा।

अर्थ एक ऐसी चीज है, जिसकी गृहस्थों के लिए उपयोगिता है, पर पैसे के

अर्जन में नैतिकता भी रहे। अर्थ पर धर्म का अंकुश रहे। निरंकुशक धन अशुद्ध हो सकता है। साधु तो पैसे के त्यागी हैं। कमल पानी में रहकर निलोप रहता है। आध्यात्मिकता का पुट जीवन में है, तो शांति रह सकती है।

सुरेंद्र के यहाँ आज आए हैं। जीवन में धार्मिकता रहे। पूज्यप्रवर ने संकल्प

स्वीकार करवाए। पूज्यप्रवर के स्वागत में सुरेंद्र पटावरी, लघु भारती से अनिल अग्रवाल, संदीप पटावरी, सुखी चोपड़ा व युवा वर्ग ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि सज्जन व्यक्तियों के समूह में कोई रहता है तो उनकी सुगंध की अनुभूति होती है और जब वे छोड़कर चले जाते हैं, तो उनके

गुणों की सुगंध हमेशा महसूस होती रहती है। हमें सज्जन व्यक्तियों की संगत करनी है। सज्जन या साधुव्यक्ति का पदार्पण होता है तो वह अपने आपमें महनीय होता है। आज जिनेट परिवार में महान संत महाश्रमणजी का आगमन हुआ है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

### कषाय और इंद्रिय विजय से होती है आत्म विजय की...

(पृष्ठ १२ का शेष)

अरिहंत भगवान शत्रुओं का हनन करने वाले होते हैं। गृहस्थ भी कषाय-विजय का अभ्यासी हो। एक शब्द में कषाय या मोह और दो शब्दों में राग-द्वेष कह दें और चार शब्दों में क्रोध, मान, माया, लोभ कह सकते हैं। कषायों से कामना प्रबुद्ध हो सकती है। लोभ तो दसवें गुणस्थान तक रह जाता है, इसे संतुष्टि से निर्मूल करने का प्रयास हो। यह एक प्रसंग से समझाया कि उसके लिए सर्वत्र संपदा है, जिसका मन संतुष्ट रहता है।

जो संतोष की भावना में रहता है, वह पूज्य होता है। कषायों को जीतना अध्यात्म की साधना है। मोहनीय कर्म तो आठों कर्मों का राजा है, सेनापति है। ये एक कंट्रोल में आ जाए तो शेष सात तो अपने आप खत्म होंगे ही। इस मोहनीय कर्म पर प्रहार हो यह पतला पड़, क्षय को प्राप्त हो तो यह विजय यात्रा संपन्न हो जाती है।

एक आत्मा को जीत लो तो चार कषाय को जीत लेंगे और चारों कषायों को जीत लेंगे तो माने सारे शत्रु पराजित हो जाएँगे। शत्रु सेना भी सबल हो सकती है। पर हम सबल को निर्बल बनाएँ। आत्म-विजय की दिशा में जो आगे बढ़ें हैं, वे कभी बुद्ध-प्रबुद्ध-संबुद्ध बन सिद्धावस्था को प्राप्त हो सकते हैं। हम आत्म विजेता बनने की दिशा में आगे बढ़ें, यह काम्य है।

आज यहाँ प्रिंस परिसर में आए हैं। जीरावला परिवार में खूब धार्मिक-आध्यात्मिक भावना रहे।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में बाबूलाल जीरावला, जीरावला परिवार की बहनों ने गीत, खुश, हीरालाल, नितिन, एडिशनल कमीश्नर जीएसटी विनोद मेहता, सरिता बैद, सरदारपुरा ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

तेयुप, जोधपुर ने २०२३ का कैलेंडर श्रीचरणों में अर्पित किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।



# आदमी व्यस्त रहे परंतु दिमाग को अस्त-व्यस्त ना रखे : आचार्यश्री महाश्रमण

जोधपुर, २१ दिसंबर, २०२२

सूर्यनगरी जोधपुर राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र का प्रमुख शहर जहाँ पर आज प्रातः १२ किलोमीटर का विहार कर तेरापंथ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी का अपनी धवल सेना के साथ पदार्पण हुआ। जो तेरापंथ के नामकरण और आचार्य भिक्षु से जुड़ा स्थान है।

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन आगम दसवें आलियं का प्रथम श्लोक है—‘धम्मो मंगल मुक्किट्टं—।’ इस श्लोक के चार चरणों में धर्म का सार भर दिया गया है। आदमी मंगलकामना करता है। अपना व दूसरों का मंगल चाहता है। जो आदमी दूसरों के लिए अमंगल चाहता है, मानो वह खुद के लिए अमंगल तैयार करने लग जाता है।

मंगल की कामना होती है, तो आदमी मंगल का प्रयास भी करता है। विशेष कार्य के प्रारंभ के लिए मुहूर्त देखा जाता है। कई पदार्थों का मंगल के लिए उपयोग किया जाता है। इनका कुछ अपना महत्त्व हो सकता है, पर ये उत्कृष्ट-बड़े मंगल नहीं हैं। उत्कृष्ट मंगल धर्म है। शास्त्रकार ने किसी धर्म-संप्रदाय का नाम न लेकर कह दिया जहाँ अहिंसा, संयम, तप है, वह धर्म उत्कृष्ट मंगल है। ये धर्म का सार हो गया जो पालेगा उसके धर्म है, मंगल है।

किसी भी वेष में धर्म की साधना करने वाला सिद्ध-मुक्त बन सकता है। यह जैन दर्शन में बताया गया है कि अन्य लिंगी या गृहस्थ के वेष में जिसके जीवन में धर्म आ गया वह मुक्ति प्राप्त कर सकता है। धर्म में कोई शर्त नहीं है। धर्म भावों में आ गया तो कल्याण हो सकता है। हमारे में सद्भावना रहे। विभिन्न जातियाँ, धर्म



संप्रदाय व वेशभूषाएँ हैं पर कोई भी हिंसा में न जाए। सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति रहे।

आदमी व्यस्त रह सकता है, पर दिमाग अस्त-व्यस्त न रहे। अणुव्रत भी यही सिखाता है। पूजा की अपनी-अपनी विधि है, पर कार्य में नैतिकता, अहिंसा, संयम तो हर संप्रदाय सिखाता है।

तपस्या के भी विविध प्रकार हैं। अहिंसा, संयम और तप जिसके जीवन में हैं, तो मंगल हमारे साथ-साथ चलेगा। मंगलपाठ भी सुनाया जाता है। न्याय पाने का साधन भी शुद्ध रहे। जिसका मन हमेशा धर्म में रमा रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

जोधपुर तेरापंथ के नामकरण से

जुड़ी भूमि है। आज हमारा यहाँ आना हुआ। जोधपुर अच्छा शहर है। जनता में बौद्धिकता के साथ भाव शुद्धि भी रहे। धर्म और अच्छे संस्कार जीवन में जुड़े रहें तो यह जीवन अच्छा रह सकता है और आगे का भी जीवन अच्छा हो सकता है। मुनि डालगणी को आचार्य निर्वाचन की सूचना भी यहीं प्राप्त हुई थी। भंडारीजी भी यहीं से

थे। जिस शहर में अहिंसा, ईमानदारी हो वह शहर अच्छा हो सकता है। सद्भावना-संयम की चेतना रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि श्रद्धालु व्यक्ति भगवान के सामने अर्चना करता है, तो उसकी मनोती पूर्ण होती है। जैसे कल्पवृक्ष सबको देता है। सूर्य कमलों को खिलाता है। मेघ बरस कर सबकी प्यास बुझाता है। आचार्यप्रवर को मैं कल्पवृक्ष, सूर्य और मेघ के रूप में देख रही हूँ। सबको सुधापान करवाते हैं।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में समणी हंसप्रज्ञा जी, सभा अध्यक्ष पन्नालाल, तेयुप से नितेश जैन, महिला मंडल से हेमलता गेलड़ा, महिला मंडल द्वारा गीत, नंदलाल बाबा, अर्पित बोहरा (आयकर आयुक्त), कन्या मंडल, विधायिका-जोधपुर मनीषा पंवार, प्रसन्नचंद मेहरा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। जलते दीप का विशेषांक पूनम मेहता ने पूज्यप्रवर को अर्पित किया। ‘दिल्ली में तेरापंथ का विकास’ भी पूज्यप्रवर को भेंट किया गया। पूज्यप्रवर ने आशीर्चन फरमाए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।



## कषाय और इंद्रिय विजय से होती है आत्म विजय की साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

भाण्डू, जोधपुर, २५ दिसंबर, २०२२

तेरापंथ के महासूर्य आज प्रातः १२ किलोमीटर का विहार कर जीरावला परिवार के परिसर में पधारे। आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि दुनिया में जय और पराजय का क्रम भी चलता है। कोई जीत जाता है, कोई हार जाता है। जय-पराजय बाहर की दुनिया में होती है, तो भीतर की दुनिया में भी जय-पराजय की बात हो तो सकती है।

शास्त्र में कहा गया कि बाहर एक योद्धा युद्ध करता है, दस लाख शत्रुओं को वह पराजित कर देता है, वह विजय तो है, परंतु बहुत बड़ी विजय नहीं है। एक साधक आदमी केवल अपनी आत्मा को जीत लेता है, वह उसकी परम जय हो जाती है। ये भीतर की आत्मा का युद्ध है।

शत्रु कौन है? एक हमारी आत्मा शत्रु है। चार कषाय व पाँच इंद्रियों जो अजित हैं, विषयासक्त हैं वे शत्रु हैं। एक आत्मा को जीत लिया तो मानो दस को जीत लिया। कषाय विजय और इंद्रिय विजय की साधना आत्म विजय की साधना है। ये आध्यात्मिक आराधना हो जाती है।

प्रश्न है—कषायों को जीते कैसे? उपाय बताया गया कि गुस्से को उपशम से, क्षमाशीलता और शांति से जीतें। अहंकार को मार्दव-मृदुता के द्वारा ऋजुता के द्वारा माया को और संतोष के द्वारा लोभ को जीतें। पाँच इंद्रियों को अनासक्ति के अभ्यास के द्वारा जीतने का प्रयास किया जा सकता है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

